चन्दामामा
जून १९९६
Rs 5

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
प्राण
चाचा चौधरी और डायनासोर
प्राण
श्रीमतीजी का जन्मदिन
अग्निपुत्र अभय और कालाजार
फौलादी सिंह और मशीनी अमिताभ
लम्बू मोटू और दस नम्बरी
चाचा भतीजा और काला जादू
जेम्स बाण्ड-45
डायमण्ड कॉमिक्स डाइजेस्ट
फैण्टम-55
मैण्ड्रेक-42
अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें और बचायें रु. 200/- वार्षिक
हर माह छः कॉमिक्स (48/- रु. की) एक साथ मंगवाने पर 4/- रुपये की विशेष छूट व डाक व्यय फ्री (लगभग 7/-) लगातार 12 वी.पी. छुड़ाने पर 13वीं वी.पी. फ्री।
1 वर्ष में महीने | बचत (रु.) | कुल बचत (रु.)
12 | 4/- (छूट) | 48.00
12 | 7/- (डाक व्यय) | 84.00
1 | 48/- (13वीं वी.पी. फ्री) | 48.00
सदस्यता प्रमाण पत्र व अन्य आकर्षक 'उपहार', स्टिकर और 'डायमण्ड पुस्तक समाचार' फ्री | 20.00
200.00
सदस्य बनने के लिए आप केवल संलग्न कूपन को भरकर भेजें और सदस्यता शुल्क के 10 रु. डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में अवश्य भेजें। इस योजना के अन्तर्गत हर माह 20 तारीख को आपको वी.पी. भेजी जायेगी जिसमें छः कॉमिक्स होंगी।
हाँ! मैं 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।
नाम
पता
डाक
जिला
पिनकोड
सदस्यता शुल्क 10 रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।
मेरा जन्म दिन
नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।
नई अमर चित्रकथायें (अप्रैल 96
राम की कथाएं
पांडव पुत्र
अगस्त्य
रमन महर्षि
वाल्मीकि
चंद्रशेखर आजाद
सुभाष चन्द्र बोस
जातक कथाएं
जातक कथाएं
हितोपदेश
नये डायमण्ड मिनी कामिक्स (अप्रैल 96)
प्राण का–चाचा चौधरी और किताब का चक्कर
लम्बू मोटू और शैतान राज
फौलादी सिंह और अंधे योद्धा
चाचा भतीजा और डंकमार
नये डायमण्ड कामिक्स (मई 96)
प्राण का–पिंकी का बगीचा
प्राण का–रमन हा! हा!!
मौत का तूफान
महाबली शाका और पिरामिड
ताऊजी और नीला शैतान
मोटू छोटू और रहस्यमय महल
फैण्टम-56 (डाइजेस्ट)
मैण्ड्रेक-43
जेम्स बाण्ड-46
नई अमर चित्रकथायें
आनन्द मठ
तुकाराम
इन्द्र व शचि
विद्यासागर
दुर्वासा
सुभाष चन्द्र बोस
गुरु नानक
चैतन्य महाप्रभु
पंचतंत्र
पंचतंत्र
नये डायमण्ड मिनी कामिक्स
प्राण का–नटखट बिल्लू
राजन इकबाल और खूनी हीरा
महाबली शाका और मौत की घाटी
ताऊजी और जादूगरनी हिडिम्बा
डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि. X-30, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-110020

डायनोज़ को घर ले आएं,

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

नक़ल उतारना मना है।

मनुष्य ने नक़ल उतारने की कला बंदर से ही सीखी होगी। जीव-विज्ञान वेत्ताओं का मानना है कि लाखों साल पहले मनुष्य का विकास-क्रम भी इसी जंतु से हुआ। इसीसे नक़ल उतारने की विद्या भी हमें प्राप्त हुई होगी, जो न ही सराहनीय है या न ही उचित।

टी.वी का प्रसारण साधारणतया दर्शक के मन के तारों को छूने के लिए होता है। वर्तमान काल में अपराध-मूलक जो-जो घटनाएँ घट रही हैं, अपराध की प्रवृत्तियाँ जो पनप रही हैं, टी.वी. में प्रदर्शित होनेवाले कुछ अवांछित कार्यक्रम इसके कारक हैं। मर्द-औरत, युवक-युवती, बूढ़े-छोटे सब इसके शिकार हो रहे हैं। यह चाहे सरकारी अथवा निजी टी.वी. ही क्यों न हो।

माना जाता है कि एक तस्वीर हज़ार शब्दों के समान है। टी.वी. पर देखे जानेवाले चाक्षुष पर भी यह लागू होता है। ये हमें कल्पना-लोक में ले जाते हैं। चाक्षुप के ये अंश हमारी अनुभूति को गुदगुदाते हैं और वास्तविक जीवन में ऐसा अनुकरण करने के लिए प्रेरित करते हैं। अंततः इसका दुखांत होता है।

अप्रैल में लखनऊ में एक विषादपूर्ण घटना घटी। छे साल के बालक ने टी.वी. पर देखे दृश्य का अनुकरण किया और फलतः मर गया। यह एक मीठे पेय के लिए किया गया विज्ञापन था, जिसमें दिखाया गया कि एक साहसिक युवक बड़ी ऊँचाई से नीचे कूदा और मीठा पेय ले जाते हुए ट्रक में से एक बोतल ले आया। उसके पैरों में रस्सी बंधी हुई थी, जिसके सहारे वह कूदा और ऊपर खींचा गया। परंतु इस बच्चे ने यह जागरूकता नहीं बरती। फलस्वरूप वह अपने घर के दूसरे छज्जे से गिरकर मर गया।

इसका यह मतलब नहीं कि आप टी.वी. न देखें। देखिये, लेकिन बेवकूफ़ी की सीमा मत लांघिये।

वर्ष : ४९ जून १९९६ अंक : १०

एक प्रति : रु. ५/- वार्षिक चन्दा : रु ६०/-

मिल्टन पेश करते हैं, पानी को सारा दिन ठंडा रखने का जग से अनोखा तरीका. क्रांतिकारी टफ़-पफ़ के इन्सुलेशन वाली मिल्टन पानी की बोतलें दिल लुभाने वाले आकार, प्रकार और डिजाइनों में मिलती हैं. तो मिल्टन से गर्मी को मार भगाइए. आपको इससे अच्छा दोस्त न मिलेगा.

MILTON

TUF-PUF

IT'S A MILTON MIRACLE

पानी रखे ठंडा, ज्यादा देर ठंडा

मुफ्त! हर मिल्टन वॉटर बोतल के साथ दो लेबल स्टिकर! जल्दी कीजिए.

Lintas Mp 10 2016 Hi

प्रशंसा

वामन कोई काम नहीं करता । माँ-बाप, भाई व भाभियों ने उसे निकम्मा मान लिया । जो-जो उसे जानते हैं, उन्होंने भी घोषित कर दिया कि वह किसी काम का नहीं है । वे सब उसी से स्पष्ट कहते रहते थे, पर उसे किसी की परवाह नहीं । उसे इसकी चिंता ही नहीं थी ।

एक दिन उसका मामा सुकीर्ति उसके घर आया । घर के सब लोगों ने वामन की शिकायत की । उसकी अकर्मण्यता पर तरह-तरह की टिप्पणियाँ कीं । सुकीर्ति ने अपने भानजे को डाँटा । वामन ने पूछा "मैंने ऐसी कौन-सी ग़लती कर दी?" "इंन्सान को चुप बैठे रहना नहीं चाहिये । उसे चाहिये कि वह काम करे, कमाये । इतना भी वह नहीं कर सका तो उसका जन्म निष्फल है । क्या तुम इतनी छोटी-सी बात भी समझते नहीं?" मामा ने पूछा । "आखिर क्यों कमाऊँ? पेट भरने, कपड़े व सिर पर थोड़े-से साये के लिए ही तो कमाना है ना? ये तीनों तो काम किये बिना ही मयस्सर हो रहे हैं, तो उनके बारे में चिंता क्यों करूँ?" वामन ने कहा ।

उसके उक्त उत्तर पर सुकीर्ति ने नाराज़ होते हुए कहा "माँ-बाप शाश्वत नहीं हैं । उनकी कभी भी मृत्यु हो सकती है । भाई-और भाभी सदा तेरी देखभाल नहीं करेंगे । तब क्या करोगे?"

"ठीक है, आपके कहे मुताबिक ही मैं मेहनत करूँगा और कमाऊँगा, पर क्या भरोसा है कि मेरी कमाई की चोरी नहीं होगी, इसलिए ज्ञानी कभी भी कल के बारे में नहीं सोचता । मैं भी एक ज्ञानी हूँ ।" वामन ने यों अपनी दलील प्रस्तुत की ।

इसपर अपना आश्चर्य जताते हुए सुकीर्ति ने कहा "जन्म लेने के बाद मनुष्य को कुछ न कुछ साधना चाहिये । अगर वह यह नहीं

नारायण चौबे

कर सका तो उसका जन्म ही व्यर्थ है, अर्थहीन है, असफल है।''

''मेरी समझ में नहीं आता कि आप कहना क्या चाहते हैं ?'' वामन ने पूछा, ''मनुष्य-जन्म बहुत ही महत्वपूर्ण है। तुम्हें ऐसे काम करने चाहिये, जिनसे और लोग हमेशा तुम्हें याद रखें, तुम्हारा आदर करें। तभी तुम्हारा जन्म सार्थक कहलायेगा '' सुकीर्ति ने समझाया।

''अच्छा, ऐसी बात है। हमारे नाना के मरे दस साल हो गये। अब सबने उन्हें भुला दिया। हमारे परदादा का नाम तो किसी को याद तक नहीं। और लोगों की बात छोड़ दीजिये, हमारे घरवाले भी नहीं जानते कि वे कौन हैं और उनका क्या नाम है। इस संसार में शरीर की ही तरह कुछ भी शाश्वत नहीं है। अशाश्वत वस्तु के लिए परिश्रम करना व्यर्थ है'' वामन ने अपने विचार व्यक्त किये।

भानजे की बातों पर लंबी साँस भरते हुए सुकीर्ति ने कहा ''तुम तो बातें करने में बड़े ही कुशल हो। पर क्या फ़ायदा? अपने जीवन-काल में एक ही बार सही अथवा किसी एक से ही सही, प्रशंसा पाओ। तभी तुम्हारा जीवन सफल कहलाया जायेगा।''

''बार-बार आप सफल शब्द का उपयोग कर रहे हैं मामाजी। आप जिस सफलता की बात कर रहे हैं, समझिये, वह मुझे मिल ही गयी। इस गाँव में प्रहलाद नामक एक बड़े

आदमी हैं। जब-जब वे मुझे देखते हैं, मेरी प्रशंसा करते रहते हैं।'' वामन ने बात इस तरीक़े से बतायी, मानों वह बड़ी ही विशिष्ट हो। ''मैं विश्वास नहीं करता'' सुकीर्ति ने कहा। ''तो शाम को नाले के किनारे आ जाइये। आँखों देख भी सकेंगे और कानों सुन भी सकेंगे।'' वामन ने कहा।

सुकीर्ति उस दिन शाम को नाले के किनारे गया। उसने वहाँ देखा कि वामन एक पेड़ के नीचे बैठा है और गुनगुना रहा है। इतने में वहाँ प्रहलाद भी आया।

वामन फ़ौरन खड़ा हो गया और सविनय उसे प्रणाम किया। प्रह्लाद ने कहा ''बैठो।''

''आप जैसे बड़े खड़े हों और मैं बैठूं, यह

तो अनुचित है'' वामन ने कहा।

प्रह्लाद ने अपना गला साफ़ करते हुए कहा ''बडप्पन में तुम्हारी बराबरी का कोई है ही नहीं। तुम महान ज्ञानी हो। बड़े से बड़े योगियों को भी इस दशा में पहुँचने के लिए दस साल लग जाएँगे। हमारे बीच में रहने की वजह से तुम्हारा मूल्य आँक नहीं पा रहे हैं। अगर तुम ज्ञानियों के संग होते तो तुम्हारी आराधना होती। वेदांत पढ़ना अलग है, समझना दूसरी बात है। तुमने तो वेदांत को आत्मसात् कर लिया। वह तुम्हारे जीवन का अभिन्न अंग हो गया।''

''इसमें मेरा कोई बड़प्पन नहीं, मुझपर आपका जो प्रेम है, ऐसा कहने से आपको बाध्य कर रहा है'' वामन ने कहा।

''मुझे फुरसत मिल जाए तो तुमसे वेदांत पर चर्चा करने की तीव्र इच्छा है। निकट भविष्य में ही भगवान अवश्य ही मेरी इस इच्छा की पूर्ति करें।'' कहकर प्रह्लाद वहाँ से चला गया। पेड़ के पीछे छिपकर उनकी बातचीत को ध्यान से सुनता हुआ सुकीर्ति प्रकट हुआ और कहा ''बड़े ही चालाक हो। अपनी खूब प्रशंसा करा ली। कहो, कैसे फँसा लिया उसे।''

''बस, यह तो लेन-देन है। मैं उनकी तारीफ़ करता हूँ और वे मेरी तारीफ़ करते हैं।'' वामन ने कहा।

सुकीर्ति ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा ''तुम्हारी प्रशंसा की, क्या इसलिए वह बड़ा है? तुम्हारी प्रशंसा की, इसी से यह स्पष्ट होता

है कि वह बड़ा है ही नहीं।"

इसपर नाराज़ होते हुए वामन ने कहा "मेरी प्रशंसा केवल प्रह्लाद ही करते हैं पर गाँव में तो सब उनको मानते हैं। गाँव में एक भी ऐसा नहीं होगा, जो उनकी प्रशंसा न करता हो। आपको मेरी बातों में संदेह हो तो आप ही लोगों से पूछ लीजिये।"

भानजे की बातों पर सुकीर्ति को विश्वास नहीं हुआ, तो उसने गाँव के एक-एक से पूछताछ की। एक व्यापारी ने प्रह्लाद के अर्थशास्त्र के ज्ञान की भरपूर प्रशंसा की। एक पंडित ने उसके पांडित्य की सराहना की। एक चित्रकार ने उसके चित्रकला नैपुण्य की वाहवाही की तो एक संगीतकार ने उसके गान-माधुर्य की। सुकीर्ति की समझ में आ गया कि प्रह्लाद असाधारण व्यक्ति है और समस्त कलाओं में कोविद है। गंभीर रूप से सोचने के बाद भी सुकीर्ति की समझ में नहीं आया कि अपने भानजे में उसने ऐसी कौन-सी विशिष्टता पायी, जिसपर वह रीझ गया और उसकी प्रशंसा किये जा रहा है।

जब यह बात उसने वामन के पिता से कही तो वह हँसकर बोला "बड़ों का यह बड़प्पन है कि वे अन्यों की सदा प्रशंसा करते रहते हैं। वामन की प्रशंसा करने से उनका बड़प्पन और बढ़ गया, पर यह थोड़े ही बड़ा हो गया?"

वामन की माँ ने अपने भाई से कहा "वामन में उन्होंने अवश्य ही कोई विशिष्टता पायी होगी। मैंने सबसे कहा कि यह रहस्य
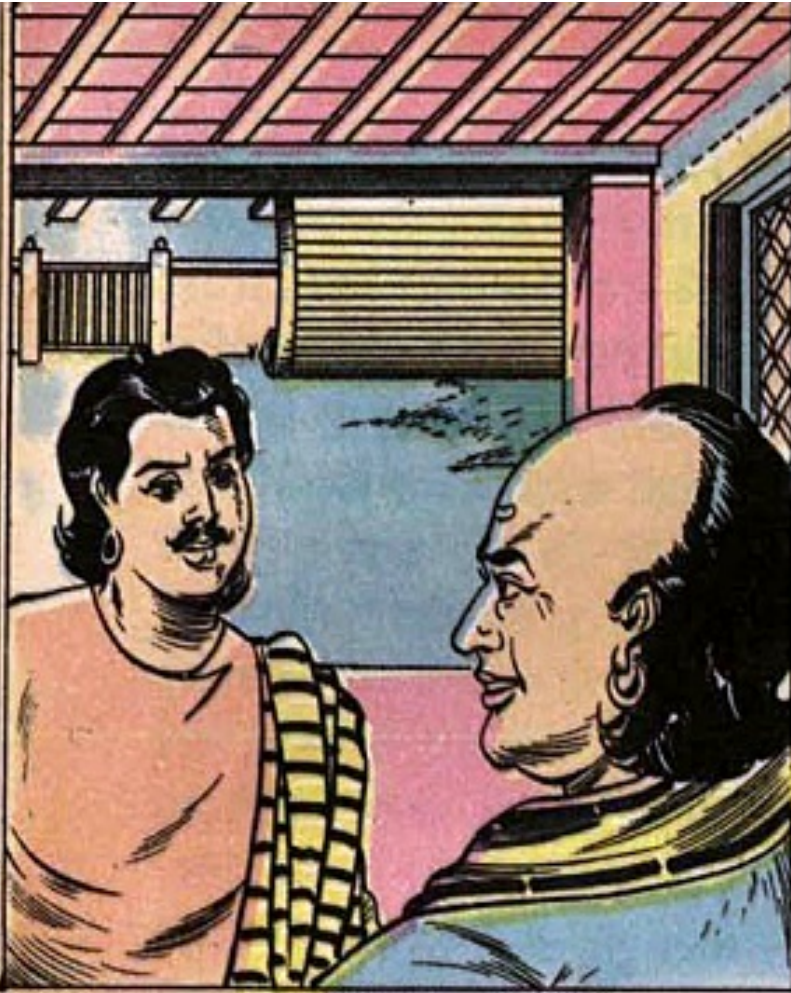
जानो, पर कोई भी मेरी बात पर ध्यान नहीं दे रहा है। तुम उनसे पूछकर जान लेना।''

सुकीर्ति में कुतूहल जगा। इस रहस्य को जानने की उसकी इच्छा तीव्र हुई। दूसरे ही दिन वह प्रह्लाद से मिला। उसकी प्रशंसा की और अपना परिचय स्वयं कर लिया।

प्रह्लाद खुश होता हुआ बोला ''कहिये, मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूँ। मुझसे हो सका तो अवश्य ही करूँगा।''

सुकीर्ति ने तुरंत वामन के बारे में बताया और पूछा ''बताइये कि उसमें आपने क्या विशिष्टता पायी?'' प्रह्लाद ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा ''वामन के बारे में कुछ नहीं जानता। प्रशंसा करना मेरी आदत है।''

''प्रशंसा करना आपकी आदत है? योग्यता को परखे बिना प्रशंसा करना क्या ग़लत नहीं? आप जैसे बड़ों के लिए यह शोभा देता है?'' सुकीर्ति ने तैश में आकर पूछा।

प्रह्लाद ने मुस्कुराते हुए कहा ''प्रशंसा करने में क्या ग़लती है। इससे दूसरे का उपकार ही होता है, अपकार नहीं।''

''एक निकम्मे को ज्ञानी कहने से वह और बिगड़ नहीं जायेगा?'' सुकीर्ति ने पूछा।

''नहीं, कोई भी अपनी प्रशंसा सुनकर थोड़ा-बहुत शरमाता है। मानव का यह सहज लक्षण है। जिसकी मैं प्रशंसा करता हूँ, वह ज्ञानी हो तो वह विनयपूर्वक शरमायेगा। अगर वह ज्ञानी न हो तो मेरी प्रशंसा का पात्र बनने के लिए प्रयत्न करेगा।'' प्रह्लाद ने कहा।

''प्रशंसक बेशर्म हो तो?'' सुकीर्ति ने प्रश्न किया। ''बेशर्म हो तो मेरा खतरा टल जायेगा'' प्रह्लाद ने नित्संकोच कहा। ''आपको और खतरा? यह कैसे?'' सुकीर्ति ने पूछा।

''निकम्मे लोग बेशर्म हों तो वे बड़ों की बेइज़्ज़ती करते रहते हैं, उनका मज़ाक उड़ाते रहते हैं। यही उनका दैनिक कार्यक्रम बन जाता है। मैं कहीं भी जाऊँ, मेरी प्रशंसा होती रहती है। मैं नहीं चाहता कि कोई भी मेरा मज़ाक उड़ाये या मेरे विरुद्ध अंटसंट बातें करे। इसीलिए मैं सब की प्रशंसा करता रहता हूँ। इससे दोनों का लाभ होता है।'' प्रह्लाद

ने हँसते हुए कहा।

सुकीर्ति उसकी चिन्तन पद्धति पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला "महाशय यह तो ठीक है, परंतु प्रशंसा के विषय में आपको विचक्षणता बरतनी चाहिये। आपको सोच-समझकर निर्णय लेना चाहिये कि कौन इस प्रशंसा के योग्य है और कौन नहीं। ऐसा न होने पर अयोग्य भी अपने को योग्य समझने की भूल कर सकता है। नहीं तो मेरा भानजा जैसा युवक अपने को ज्ञानी समझ बैठने की ग़लती कर सकता है। इस भ्रम में पड़कर अपने पैरों पर खुद कुल्हाड़ी मार सकता है।"

प्रह्लाद ने कहा "ज्ञानी वही है, जो अपने बारे में स्वयं जान पाता है। अन्यों से अपने ज्ञानी होने की बात जानना मूर्खता है। अपनी बातों से न ही मैं किसी के ज्ञान की वृद्धि कर सकता हूँ, न ही किसी की मूर्खता को घटा सकता हूँ।"

"फिर भी प्रशंसा करने के पहले यह जानना ज़रूरी है कि वह उसके लायक है या नहीं।" सुकीर्ति ने हठपूर्वक कहा।.

प्रह्लाद ने 'ना' का भाव दर्शाते हुए सिर हिलाकर कहा "दूसरों के बारे में जानने के लिए मैं अपने समय का दुरुपयोग क्यों करूँ? मैं तो सदा नयी-नयी बातों को जानने के अवसर ढूँढ़ता रहता हूँ। जिन लोगों से मैं ज़्यादा बातें नहीं करता, अपना समय नहीं गँवाता, वे मेरी दृष्टि में निकम्मे हैं, निरुपयोगी हैं। बस, उनकी थोड़ी-बहुत प्रशंसा करता हूँ और उनसे छुटकारा पा लेता हूँ।" सुकीर्ति के सब संदेह दूर हो गये।

घर वापस आकर भानजे से सविस्तार बताया और कहा "प्रह्लाद से मैंने बहुत कुछ सीखा। आगे से मैं भी तुम्हारी प्रशंसा में दो-तीन वाक्य कहता रहूँगा। सच कहा जाए तो तुम जैसा महाज्ञानी इस संसार में कोई है ही नहीं।"

वामन को अब अच्छी तरह से मालूम हो गया कि वास्तव में वह है क्या? वह अपने आप पर लज्जित हुआ। क्रमशः उसमें परिवर्तन आया। फिर कभी भी प्रह्लाद से प्रशंसा पाने की कोशिश उसने नहीं की।

अपने चन्देदारों से अनुरोध व घोषणा

प्रिय मित्रो,

आपकी प्रिय 'चन्दामामा' पत्रिका शीघ्र ही पचास वर्ष पूरी करनेवाली है। इस अवसर पर इसमें परिवर्तन लाने का हमारा उद्देश्य नहीं है, पर परिवर्तन हमारे लिए नितांत आवश्यक हो गया है। प्रथम - इधर कुछ सालों से हम आयात किये गये कागज का ही उपयोग करते आ रहे हैं। हम केवल पत्रिका के लिए आवश्यक आकार तथा बड़ी मात्रा में कागज पाने केलिए ही कठिनाइयों का सामना नहीं कर रहे हैं, बल्कि इसके घटते-बढ़ते दामों के कारण भी कठिनाई भी का सामना कर रहे हैं। और ये दाम हमेशा बढ़ते ही रहे हैं।

दूसरे क्षेत्रों में भी साथ ही साथ बढ़ते हुए मूल्यों के कारण इस सचित्र पत्रिका की छपाई और निर्माण में भी तरह-तरह की बाधाएँ उपस्थित हो रही हैं।

पहले अनेकों अवसरों पर हमने स्वयं ही इन आघातों को सह लिया। हम नहीं चाहते थे कि यह बोझ अपने पाठकों पर लादें। परंतु हम आज ऐसी स्थिति पर आ पहुंचे, जहाँ अपने पाठकों से हमें अनुरोध करना ही पड़ रहा है और उनसे प्रार्थना करनी ही पड़ रही है कि वे हमारे बोझ को थोड़ा-सा हल्का करने में हमारी मदद करें।

द्वितीय - दाम - जुलाई, १९९६ से आपकी पत्रिका के दाम में एक रुपये की वृद्धि होगी। पाँच रुपयों के बदले इसका दाम होगा छे रुपये। इस कारण वार्षिक चंदा होगा रु. ७२.०० रुपये।

तृतीय - पत्रिका के आकार में थोड़ी-सी वृद्धि होगी, जिससे आपकी मनोरंजन-पूर्ण पठन-सामग्री बढ़ेगी। यो संशोधित आपकी पत्रिका अपनी सुवर्ण-जयंती मनायेगी। पत्रिका का आकार लगभग वही होगा, जैसे अपने मौलिक दशा में था। हमें आशा है कि आप इन परिवर्तनों का स्वागत करेंगे।

आप सबको मेरी शुभ-कामनाएँ

आपका विश्वसनीय

(बी. विश्वनाथ रेड्डी)

प्रकाशक
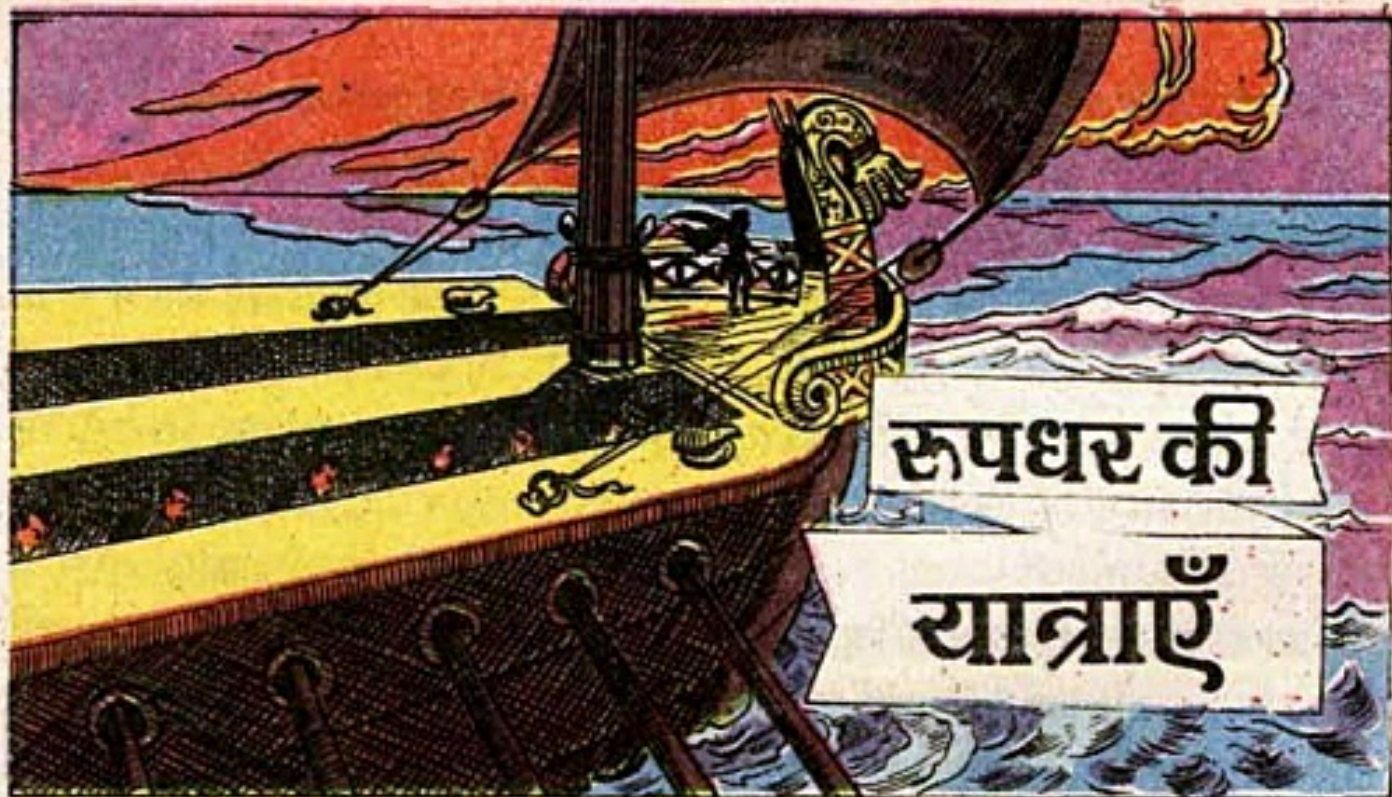
११

(ट्रोय युद्ध की समाप्ति के बाद रूपधर स्वदेश इथाका पहुँचने के लिए उतावला था। यात्रा में उसे अनेकों कष्ट झेलने पड़े। इस प्रयास में उसके सब के सब अनुचर मारे गये। आख़िर वह अकेले ही स्वदेश पहुँच पाया। किन्तु अब भी उसके कष्टों का अंत नहीं हुआ। उसकी इष्टदेवी बुद्धिमति ने उसपर दया करके, उसी की भलाई के लिए उसे वृद्ध बना दिया और उसके रूप को परिवर्तित कर दिया। इस बीच इथाका में)
- बाद

ट्रोय युद्ध से ग्रीकों के वापस आ जाने के बाद अफ़वाह फैली कि रूपधर की मृत्यु हो गयी। इथाका के आसपास के द्वीपों के एक सौ बारह राजकुमार रूपधर के घर आ बैठे। वे सब के सब चाहते थे कि जैसे भी हो, रूपधर की पत्नी पद्ममुखी से शादी करें और राजा बन जाएँ। हर एक का यही आशय था।

धीरमति अभी-अभी यौवन में प्रवेश कर रहा था। जब वह शिशु था, तभी रूपधर युद्ध-क्षेत्र में जा चुका था। इसलिए वह अपने पिता को बिल्कुल जानता नहीं था। किन्तु वह अपने पिता को देखने के लिए बहुत ही लालायित था। बड़ी बेचैनी से उसका इंतज़ार कर रहा था। जब उसने देखा कि पिता के बारे में कोई ख़बर नहीं है तो बहुत ही चिंतित हुआ और सोचा ''अगर ख़बर मिल जाए कि पिताजी चल बसे तो अच्छा होता। माँ किसी

से शादी कर लेती।''

सब राजकुमार धीरमति को असमर्थ मानकर, उसी के घर में रहने लगे। वे रूपधर के पशुओं को मारते और खाते। शराब पीते और शोरगुल मचाते रहते थे। नशे में चिल्लाते रहते कि पद्ममुखी मेरी पत्नी है। धीरमति की समझ में नहीं आया कि इनसे कैसे छुटकारा पाऊँ, घर से कैसे भगाऊँ।

पद्ममुखी का दृढ़ विश्वास है कि उसका पति अवश्य ही लौट आयेगा। ज्योतिष द्वारा उसे मालूम भी हो गया कि उसका पति जीवित है और लौटकर आयेगा। इसलिए दूसरी शादी करने से उसने साफ़-साफ़ इनकार कर दिया। उसको चाहनेवाले राजकुमारों ने यह कहकर उसपर दबाब डालना शुरू कर दिया कि तुम्हारा पति मर चुका है, शादी कर लो। उनसे बचने के लिए उसने एक उपाय सोचा। उसने उनसे कहा ''मैं अपने ससुर के शव को ढ़कने के लिए एक कपड़ा बुन रही हूँ। यह काम पूरा होते ही मैं शादी करूँगी।'' राजकुमारों ने उसकी बात का विश्वास कर लिया।

तब से पद्ममुखी दिन भर कपड़ा बुनने के काम में लगी रहती और रात के समय उसे खोलती जाती। तीन सालों तक ऐसा ही होता रहा। एक दिन राजकुमारों ने जान ही लिया कि वह उन्हें धोखा दे रही है। तब से उनका दबाव बढ़ता गया। वे उसे व्यंग्य-बाणों से सताने लगे। यह हद से बढ़ गया।

धीरमति अपनी ही आँखों के सामने होते
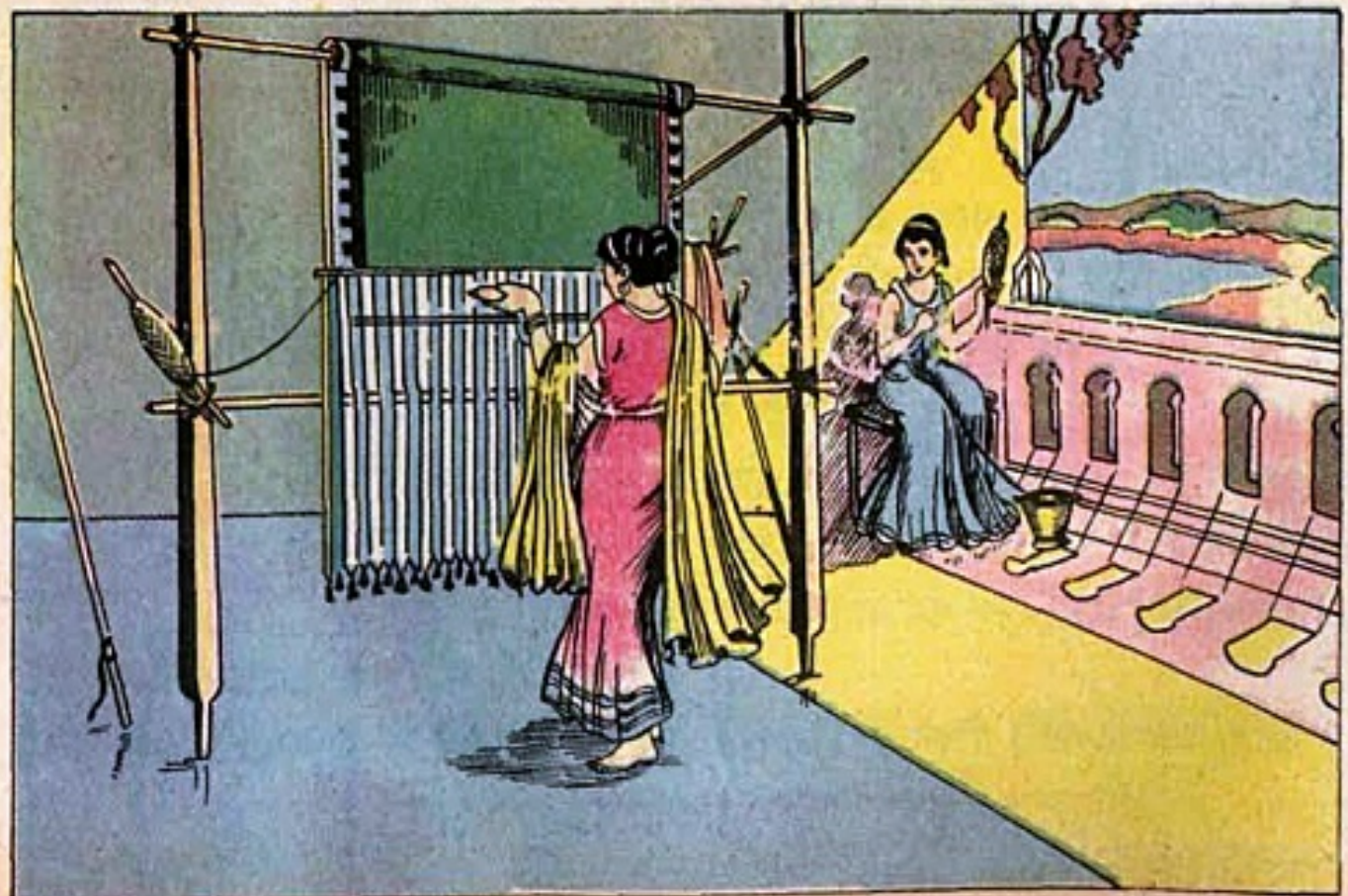
हुए इस अन्याय को सह नहीं सका। उसने खूब सोच-विचारकर एक निर्णय लिया। पैलास जाकर नवद्योत से मिलने और स्पार्टा में प्रताप से मिलकर अपने पिता के बारे में जानकारी पाने के लिए निकलना चाहा। सबसे पहले युद्ध-क्षेत्र से लौटा हुआ व्यक्ति था प्रताप। इसलिए उसने सोचा कि उसे अपने पिता के बारे में अवश्य ही थोडी-बहुत जानकारी होगी।

उसने सोचा "मेरे पिता की मृत्यु का धृवीकरण हो जाए तो मैं उनकी अंत्यक्रियाएँ करूँगा और माँ का स्वयंवर भी। इन दुष्टों के अत्याचार मुझसे सहे नहीं जाते। मेरी उम्र के कितने ही युवक बलशाली और पराक्रमी हैं और मैं निर्वीर्य बनकर चुप बैठा हूँ। अगर मेरे पिता के जीवित होने की संभावना है तो घर लौटकर उन दुष्टों का संहार करूँगा, चाहे इसमें मेरी जान भी चली जाए।" यह निर्णय लेने के बाद उसने उस दिन राजकुमारों से कहा "महाशयो, आप सब लोग मेरी माँ से शादी करने के लिए उत्सुक हैं। ठीक है, किन्तु आपका बरताव मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। कल पेड़ के नीचे के चबूतरे पर सबको इकट्ठा करनेवाला हूँ और खुल्लमखुल्ला कहनेवाला हूँ कि तुम सबको मेरे घर से चले जाना है। अपने घरों में खाओ, पीओ, मौज उडाओ, पर आगे से यह सब मेरे घर में होने नहीं दूँगा। फिर भी आप ऐसा ही करते रहें तो आप सबको मिटा दूँगा।"

धीरमति के इस आकस्मिक धैर्य से सब

राजकुमार चकित रह गये।

दूसरे ही दिन सबेरे उसने मुनादी पीटनेवाले को बुलाया और उसे आज्ञा दी कि सब नागरिकों को चबूतरे के पास इकट्ठा होने को कहो। उसने हाथ में एक बर्छी ली, दो कुत्तों को भी साथ ले गया और शूर की तरह चबूतरे के पास आया। वहाँ जमा हुए बड़ों ने धीरमति को उस स्थान पर बिठाया, जहाँ उसका पिता आसीन होता था। यह अग्र स्थान था। सबके बैठ जाने के बाद वृद्ध ऐगुप्त ने बोलना शुरू किया। इसके बेटों में से एक बेटा रूपधर का अनुचर था। फाललोचन के हाथों मारे जानेवाले ग्रीक वीरों में से एक था। एक और बेटा पद्ममुखी से शादी करने के लिए उतावले राजकुमारों में से था। उस वृद्ध ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा "पुत्र, यह बैठक बुलाकर अच्छा ही किया। क्योंकि रूपधर के युद्ध में चले जाने के बाद इथाका में कोई बैठक ही नहीं हुई। नागरिकों का समावेश हो नहीं पाया। यह जानने की मेरी भी तीव्र इच्छा है कि हम यहाँ क्यों इकट्ठे हुए।"

वृद्ध की बातों ने धीरमति के मन में उत्साह भर दिया। वह उठ खड़ा हुआ और बोला "महोदय, इस समावेश का प्रबंधक मैं हूँ। केवल अपनी तक़लीफ़ों को बताने के लिए ही मैंने आप सबको बुलाया। मेरा घर दो विपत्तियों से घिरा हुआ है। मैंने अपने सुप्रसिद्ध पिता को खो दिया। एक समय पर वे आप सबके राजा थे। उनके न लौटने की वजह से मैं बड़ी विपत्ति में फँस गया। मेरे पिता की अनुपस्थिति का लाभ उठाकर कितने ही राजकुमार मेरी माँ से शादी करने के लिए, मेरे घर में आसन जमाये बैठे हैं। वे हमारे घर को खोखला कर रहे हैं। मुझे डर लगने लगा है कि जल्दी ही मेरा सर्वनाश हो जायेगा। यहाँ उपस्थित लोगों में कुछ ऐसे भी हैं, जो तथाकथित राजकुमारों के पिता हैं। मेरे दादा के पास जाकर उनकी बेटी का हाथ पूछने का साहस इनमें नहीं है। इसलिए वे मेरे घर में जम गये और हमारे पशुओं को मारकर खाये जा रहे हैं, शराब पीते जा रहे हैं और

होहल्ला मचा रहे हैं। जो चाहते हैं, करते जा रहे हैं। मेरे पिताजी के न होने की वजह से हमारा घर हमारा नहीं रहा। आप ही बताइये कि मेरे पिताजी ने ऐसा क्या देशद्रोह-भरा काम किया, जिसके लिए हम यह सज़ा भुगत रहे हैं। मैं समझता हूँ कि यह सब कुछ जो हो रहा है, जिसे जानकर आप भी शर्मिंदा हैं।

दुर्बुद्धि नामक एक व्यक्ति फ़ौरन उठ खड़ा हुआ और बोला "धीरमति, तुम्हारे आरोप का कोई अर्थ नहीं। ग़लती तो तुम्हारी माँ की है। हमपर इल्ज़ाम लगाने से क्या फ़ायदा? गत तीन सालों से तुम्हारी माँ हमें धोखा देती आयी है। उसने हममें से हर एक के मन में आशा उत्पन्न की। कहती थी कि कपड़ा बुनना ख़तम होने पर शादी करूँगी। हम सभी को उसी ने इसी भ्रम में रखा। चौथा साल भी आ गया, पर कपड़े की बुनाई ख़तम नहीं हुई। भला ख़तम भी क्योंकर होगी। क्योंकि दिन में जो बुनती है, रात को निकाल देती है। उससे शादी करने की इच्छा रखनेवालों की तरफ़ से मैं कह रहा हूँ। सुनो, तुम उसे अपने घर से भेज दो और उससे कहो कि जिससे वह शादी करना चाहती है, उससे करे। ऐसा न हो और हमें वह इसी प्रकार धोखा देती रहे तो हम भी उस घर से जानेवाले नहीं हैं। यह सच है और सच के सिवा कुछ नहीं।"

"अपनी माँ को घर से निकालना किसी भी हालत में संभव नहीं है। अलावा इसके,

अपने पिता से जो दहेज ले आयी, उसे लौटाने की स्थिति में भी वह नहीं है।" धीरमति ने कहा।

एक और वृद्ध उठ खड़ा हो गया और कहा "रूपधर के युद्ध पर जाने के पहले मैंने भविष्यवाणी की थी। मैंने कहा था कि बीस साल बाद ही अनेकों कष्टों को झेलते हुए वह लौटेगा। जो-जो मैंने कहा, अब तक ऐसा ही होता आ रहा है। वह ज़रूर आयेगा। जो-जो उसके घर में आसन जमाये बैठे हैं, उनके बुरे दिन आनेवाले हैं।"

"अपना ज्योतिष अपने बेटों को सुनाओ। हमें पद्ममुखी चाहिये। तुम्हारी धमकियों से हम डरनेवाले नहीं है। रूपधर आ भी गया

तो हमें अपने घर से निकालने का साहस नहीं कर पायेगा।'' एक और ने यों बड़ी-बड़ी बातें कीं।

आखिर धीरमति ने कहा ''मुझे जो बताना था, बता दिया। कृपा करके मुझे एक नौका और बीस नाविक दिलवायेंगे तो मैं स्पार्टा और पैलास हो आऊँगा और अपने पिता के बारे में जानकारी प्राप्त करके लौटूंगा। अगर मालूम हो जाए कि वे जीवित हैं, तो एक और साल तक ये अत्याचार सहूँगा। उनकी मृत्यु का सबूत मिल गया तो उनकी अंत्यक्रियाएँ करूँगा और माँ की भी शादी कराऊँगा।''

समावश के पूरा हो जाने के बाद धीरमति घर नहीं गया। समुद्र के किनारे आकर बैठ गया। वहाँ उसकी मुलाकात सहन से हुई। वह उसके पिता रूपधर का आप्त मित्र था। धीरमति को देखकर उसने कहा ''पुत्र, तुम्हें देखकर मैं बहुत प्रसन्न हुआ। तुमने प्रमाणित कर दिया कि तुम अपने पिता के योग्य पुत्र हो। इथाका में बहुत-सी नौकाएँ हैं। सब से श्रेष्ठ नौका का प्रबंध मैं तुम्हारे लिए करूँगा। यात्रा के लिए आवश्यक नाविकों का भी इंतज़ाम मैं कर दूँगा। तुम घर जाओ और यात्रा के लिए आवश्यक सामग्रियाँ लेकर आना।''

धीरमति तुरंत घर आया। उसे देखते ही वहाँ उपस्थित राजकुमार उसकी खिल्ली उड़ाने लगे। उसपर व्यंग्य कसने लगे। वे कहने लगे ''बाप रे बाप, यह तो हमारा रक्त पीने पर तुल गया। हमने तो अब तक इसे नादान समझ
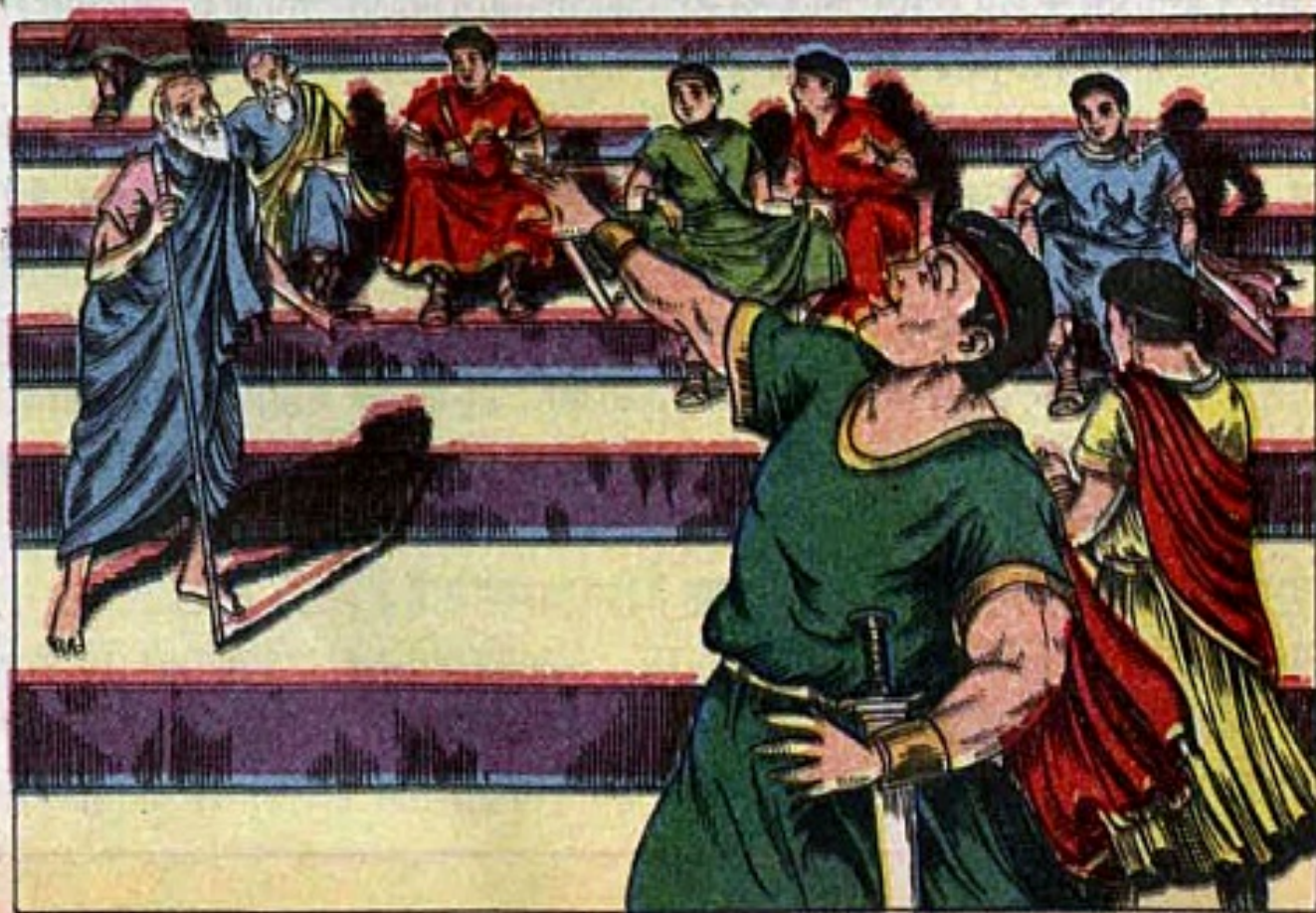
रखा था। अब यह क्या से क्या हो गया।"

दूसरे ने कहा "जानते हो, यह क्यों स्पार्टा और पैलास जा रहा है? वहाँ से सेना ले आने।"

तीसरे ने कहा "यह एक दिन हमारे पेय में विष मिला देगा और हमें मार डालेगा।"

चौथे ने कहा "हो सकता है, यह अपने पिता की ही तरह समुद्र में ही डूब जाए। तब तो इसकी जायदाद को आपस में बाँटना हमारे लिए मुश्किल हो जायेगा।"

धीरमति ने उनकी टिप्पणियों की कोई परवाह नहीं की। उसने अपनी बूढ़ी दासी से कहा कि यात्रा के लिए आवश्यक प्रबंध करो।

"बेटे, तुम मत जाओ। तुम भी समुद्र की यात्रा करने चले जाओ तो तुम्हारी माँ का क्या होगा? असल में यह विचार तुम्हारे मस्तिष्क में आया ही क्यों? कैसे?" बूढ़ी दासी ने रोते हुए कहा। धीरमति ने उसे शांत करते हुए कहा "बड़ी माँ, यह दैव निर्णय है। मुझे तुम रोको मत। रात को माँ के सो जाने के बाद चला जाऊँगा। क़सम खाओ कि जब तक वह मेरे बारे में नहीं पूछेगी, तब तक तुम मेरी यात्रा के बारे में उससे कुछ नहीं कहोगी। यात्रा के लिए आवश्यक सामग्री तथा भोजन आदि का प्रबंध करो।"

इस बीच सहन गलियों में घूमता रहा और निपुण नाविकों को चुना। उन्हें समुद्र-तट पर भेज भी दिया। एक अच्छी नौका भी मिल गयी। इतने में रात भी हो गयी। रूपधर के घर में सबने भरपेट खाया, पिया और सो भी गये। उस समय सहन ने आकर धीरमति से कहा "बेटे, यात्रा के लिए सब कुछ तैयार है। बस, तुम्हारे आने की ही देरी है।"

दोनों मिलकर समुद्र-तट पर पहुँचे। नाविकों ने रूपधर के घर से लायी यात्रा के लिए आवश्यक सामग्रियाँ नाव में रख दीं। धीरमति नौका में बैठ गया। नाविकों ने पतवार संभाली, लंगर उठा दिया और चल पड़े। अनुकूल हवा चलने लगी। नौका पैलास की तरफ़ बढ़ी।

-सशेष
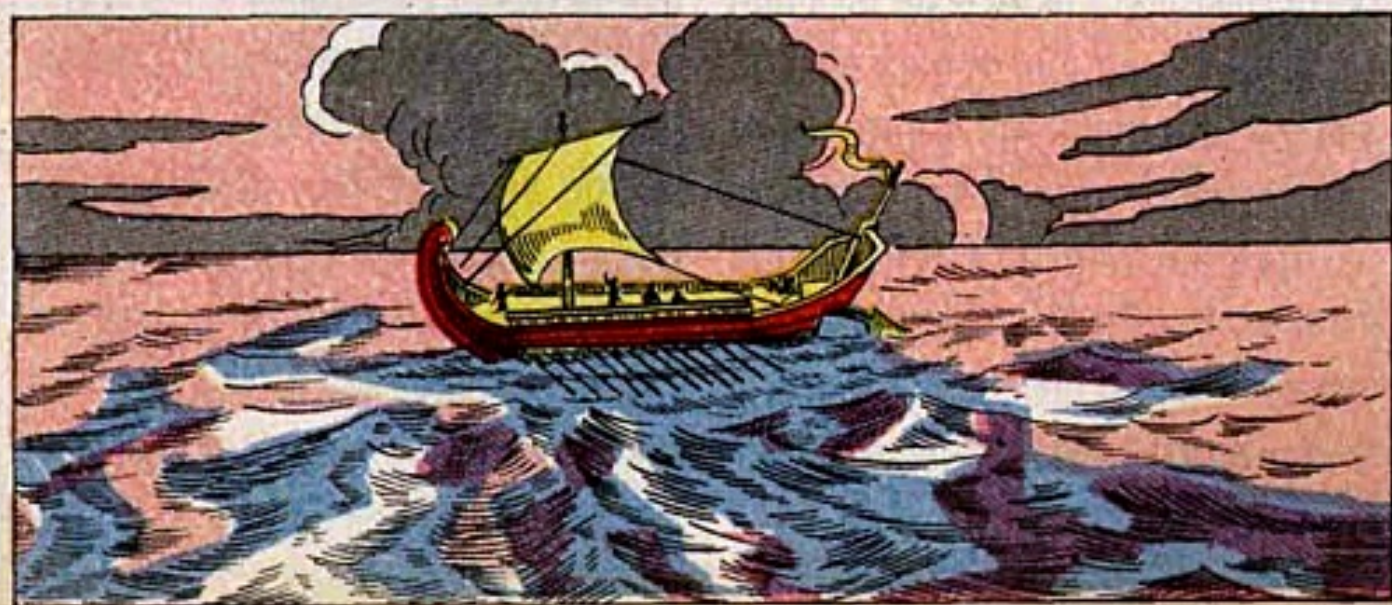
'चन्दामामा' की ख़बरें

बहुत छोटे

हमारी लोकसभा के चुनाव अभी-अभी ख़तम हुए। साथ ही साथ कुछ विधान-सभाओं के चुनाव भी संपन्न हुए। कुछ वर्षों से राष्ट्रपति द्वारा शासित जम्मू-कश्मीर में भी अब चुनाव हुए। हमारे देश का सबसे छोटा मतदान केंद्र भी यहीं है। लडख जिले के हानफाला में सिर्फ नौ मतदाताओं के लिए एक मतदान-केंद्र का प्रबंध किया गया। वह गाँव समुद्री समतल से ५,००० फुट की ऊँचाई पर है।

संसार की अत्यधिक जनसंख्यावाले चीन देश के टिबेट के एक गॉव में तीन ही लोग रहते हैं। टिबेट की राजधानी लासा के ५५० कि.मी. की आग्नेय दिशा में यूमेन है, जहाँ ७२ साल का वृद्ध बाप और उसकी दो पुत्रियाँ निवास करती हैं। अब तक बाप ही गाँव का मुखिया था, पर अब उसकी बेटी ने वह जगह ले ली।

बहुत ऊँचा

मलेशिया के कोलालंपूर में संसार के सबसे ऊँचे भवन का निर्माण पूरा होनेवाला है। 'पेट्रोनास टवर्स' के बनते-बनते इसकी ऊँचाई होगी ४४५ मीटर। इस ऊँचाई में शामिल करना होगा टी.वी. एँटीना को भी। अमेरीका के चिकागो नगर में स्थित 'सेयर्स टवर' की ऊँचाई है ४३५ मीटर।

बहुत बड़ा

चीन की एक और प्रत्येकता है। एशिया का सबसे बड़ा रेल्वे स्टेशन बीजिंग में है। एक ही समय में स्टेशन में ६०-९० रेल-गाडियाँ आती-जाती रहती हैं। कहा जाता है कि इस स्टेशन का उपयोग एक ही दिन में ६,००,००० यात्री कर सकते हैं। जनवरी के तीसरे हफ़्ते में चीन के प्रधान मंत्री ली पेंग ने इस स्टेशन के उद्घाटनोत्सव की अध्यक्षता की। चीन के नेता मान टी तुंग ने अद्भुत लोह मूर्ति से सुसज्जित 'मान टी तुंग ट्रैन' का उद्घाटन हरा झंडा हिलाकर किया। इस स्टेशन के निर्माण-कार्य में २०,००० मज़दूरों ने भाग लिया और इसे पूरा करने में तीन साल लगे।

एशिया के ही एक और देश थायलांड की राजधानी बांकाक में संसार का सबसे बड़ा रेस्टारेंट है। वह ३.३४ एकड़ों की ज़मीन पर विस्तरित है। इस रेस्टारेंट का नाम है 'रायल ड्रागन'। इस रेस्टारेंट में दो सौ आदमी काम कर रहे हैं। ५४०, मर्द और औरत परिवेषक व परिवेषिकाएँ हैं। ३२५ उत्तम रसोइये हैं। परिवेषक 'रोलर स्केटस' पर घूमते रहते हैं। ५,००० व्यक्ति एक साथ बैठकर यहाँ भोजन कर सकते हैं। जब देखो, तब इस होटल में भीड़ होती ही रहती है। एक घंटे में यहाँ ३,००० पकवान बनते हैं। शायद आप समझते होंगे कि भोजन करने की जगह बहुत ही बड़ा हाल होगा। बल्कि ऐसा न होकर अलग-अलग कक्षों में ही इसका प्रबंध हुआ है।

रखवाला राक्षस

धुन का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "राजन्, तुम्हारी सहनशक्ति तथा आग्रह को देखते हुए लगता है कि आवश्यकता पड़ने पर अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए जीवन-भर इसी भयंकर श्मशान में रह जाओगे। तुम्हारे प्रयासों को देखते हुए मैं समझता हूँ कि जीवन के कुछ कठोर सत्यों से तुम अपरिचित हो। शायद यह भी हो सकता है कि इन सत्यों से परिचित हो और उनका सामना करने के लिए कटिबद्ध हो। तब तो तुम्हारे साहस की दाद देनी ही पड़ेगी। परंतु एक मुख्य विषय है, जिससे तुम्हारा परिचित होना नित्तांत आवश्यक है। मनुष्य से कुछ अत्यंत स्वार्थी होते हैं। अपना भला न हो, इसकी भी उन्हें परवाह नहीं। पर वे दूसरों को हानि पहुँचाने से पीछे नहीं हटते। उनकी बुद्धि वक्र होती है। उनकी

बेताल कथा

विचार-पद्धति कुटिल तथा षड्यंत्र-पूर्ण होती है। मुझे संदेह हो रहा है कि तुम किसी ऐसे दुष्ट व्यक्ति के हाथों में फँसकर यहाँ नाना प्रकार की कठिनाइयाँ चुपचाप सहे जा रहे हो। अगर मेरा संदेह सच हो तो तुम्हें बताना चाहूँगा कि इस हठ को छोड़ दो और राज्य लौटकर सुख से अपना जीवन गुज़ारो। इसी में तुम्हारी भलाई है। चक्रधर नामक एक दुष्ट व्यक्ति की कहानी मुझसे सुनो, जिसे अनायास ही, बिना माँगे ही अपार संपदा उपलब्ध हुई। उस अहंकारी ने उन-उन को विपदाओं में फँसा दिया, जो-जो उससे सलाहें माँगने आये। तुम्हें सावधान करने मैं यह कहानी सुना रहा हूँ'' बेताल ने आगे यों कहा।

एक गाँव में चक्रधर नामक एक युवक था। उसका अपना कोई नहीं था। बचपन में ही घरों में काम करके अपना पेट भरता था। फ़ुरसत मिलती तो गाँव के पंडितों के आश्रय में जाता और उनसे शास्त्रों का थोड़ा-बहुत ज्ञान प्राप्त करता था।

उसी गाँव में सौदामिनी नामक एक युवती थी। एक दिन उसने बड़ा ही विचित्र सपना देखा। सपने में उसे बैरागी दिखाई पड़ा और कहा ''योग्य व्यक्ति से विवाह करोगी तो सुखपूर्वक जीवन बिता पाओगी।''

सौदामिनी ने पूछा ''कैसे जानूँ कि वह व्यक्ति योग्य है?'' बैरागी ने कहा ''जिस व्यक्ति से तुम पूछोगी कि आकाश में कितने नक्षत्र हैं और जो जवाब में यह कहेगा कि शादी के बाद बैठकर उनकी गिनती करेंगे, वही तुम्हारे लिए योग्य पति होगा।''

जागने के बाद सौदामिनी ने सपने के बारे में सोचा और इस बात पर उसे आश्चर्य हुआ कि मैंने ऐसा सपना क्यों देखा। उसने यह बात घर के किसी को भी नहीं बताया।

उस दिन दुपहर को सौदामिनी अपनी सहेलियों के साथ आम के बग़ीचे में गयी। वहाँ सब आँख मिचौली का खेल खेलने लगीं। सौदामिनी एक पेड़ के पीछे छिप गयी और उधर से गुज़रते हुए एक साँप की पूँछ को अनजाने में अपने पैरों से दबाया।

साँप ने अपना फन फैलाया और डसने

तैयार हो गया। पल भर में किसी ने उसका हाथ पकड़कर खींचा। साँप फ़ौरन तेज़ी से रेंगता हुआ चला गया।

तब सौदामिनी ने देखा कि उसका हाथ पकड़नेवाला और उसकी रक्षा करनेवाला कौन है। वह चक्रधर है।

सौदामिनी का हाथ पकड़कर खींचने के बाद उसकी सुँदरता पर मुग्ध होकर वह उसी को एकटक देखने लगा।

ऐसे तो चक्रधर को वह जानती थी पर इतनी नज़दीकी से उसने उसे कभी नहीं देखा। उसे लगा कि वह देश में भ्रमण करने बहुरूपिया बनकर आया हुआ राजकुमार है।

"मेरे प्राणों की रक्षा की, इसके लिए हार्दिक धन्यवाद" सौदामिनी ने कहा।

"हाँ, तुम्हारे प्राणों की रक्षा करने के लिए ही तुम्हारा स्पर्श किया। ऐसा मधुर अनुभव आज तक मुझे कभी भी नहीं हुआ। मैं ही तुम्हारा कृतज्ञ हूँ।" चक्रधर ने कहा।

सौदामिनी को संदेह हुआ कि कहीं चक्रधर ही मेरे लिए योग्य पति तो नहीं है?

उसने तुरंत चक्रधर से पूछा "लगता है कि तुम बहुत ही होशियार हो। क्या बता सकते हो, आकाश में कितने नक्षत्र हैं?"

"बता सकता हूँ। किन्तु मुझे भय है कि कहीं तुम नाराज़ न हो उठो।" चक्रधर ने कहा।

"नहीं, बिल्कुल नाराज़ नहीं हूँगी। बताना।" वादा किया सौदामिनी ने।

"बहुत-से सालों तक कष्ट झेलकर आख़िर नक्षत्रों को गिन ही लिया। गिनती पूरी हो जाने के बाद शक हुआ कि एक-दो नक्षत्रों को मैंने गिना नहीं। और एक बार गिनने की मेरी शक्ति नहीं। इसलिए चाहता हूँ कि एक ऐसी लड़की से विवाह रचाऊँ, जो मेरी ही तरह नक्षत्रों को गिनने में आसक्ति रखती है। दोनों मिलकर गिनें तो यह काम सफलतापूर्वक हो सकता है" चक्रधर ने कहा।

उसका उत्तर सुनते ही सौदामिनी इस निर्णय पर पहुँची कि यही मेरे लिए योग्य पति है। वह शरम के मारे गड़ गयी और हवा की तरह तेज़ी से वहाँ से भाग गयी।

सौदामिनी का बाप आग-बबूला होता हुआ बोला "सपने झूठे और बेकार होते हैं। चक्रधर सुंदर है, हट्टा-कट्टा है, इसलिए हमारी बेटी उसपर रीझ गयी होगी। जिसके पास खोटा पैसा भी नहीं, उससे अपनी बेटी की शादी कैसे करें? क्यों करें? मैं किसी भी हालत में शशिकांत से ही अपनी बेटी की शादी कराऊँगा।"

सौदामिनी जानती थी कि उसका बाप कितना हठी है। इसलिए उसने कहा "मुझे मौक़ा दीजिये, जिससे मैं साबित कर सकूँ कि मेरा सपना झूठा नहीं है। एक साल तक मेरी शादी स्थगित कर दीजिये। इसके अंदर अगर चक्रधर, शशिकांत से भी अधिक धन कमा पायेगा तो उससे मेरा ब्याह रचाइये।" उसने अपने माँ-बाप से प्रार्थना की।

इसपर उसका बाप ज़ोर से हँस पड़ा और कहा "चक्रधर क्या एक ही साल के अंदर लाख अशर्फ़ियाँ कमा पायेगा? शायद तुम नहीं जानती कि शशिकांत लखपति है, इसीलिए ऐसी बातें कर रही हो।"

"अगर चक्रधर मेरे लिए योग्य वर हो तो अवश्य कमा पायेगा। मेरा सपना सच साबित होगा" विश्वास-भरे स्वर में सौदामिनी ने कहा।

पिता ने उसकी शर्त मान ली। सौदामिनी ने चक्रधर को संदेश भेजा।

चक्रधर ने भी ठान लिया कि सौदामिनी

घर पहुँचने पर उसने शशिकांत नामक एक युवक को देखा। उस युवक का दावा है कि वह सौदामिनी को चाहता है, उससे प्रेम कर रहा है।

वह सौदामिनी के माँ-बाप को बता रहा है कि उनकी बेटी की शादी उससे की जाए तो वह उन्हें हज़ार अशर्फ़ियाँ देगा। लगता था कि उसके प्रस्ताव से वे खुश हैं। थोड़ी देर के बाद जब वह चला गया तब सौदामिनी ने अपनी माँ को अपने सपने के बारे में तथा बगीचे में घटी घटना के बारे में सविस्तार बताया। उसने स्पष्ट शब्दों में अपनी माँ को बता भी दिया कि मैं शादी करूँगी तो चक्रधर से ही करूँगी। माँ ने यह बात अपने पति को बताया।

से शादी करके ही रहूँगा। धन कमाने का निर्णय लेकर वह शहर चला गया। उसने वहाँ तरह-तरह के काम किये। महीने गुज़र गये, पर एक हज़ार अशर्फ़ियाँ भी कमा नहीं पाया। लाख अशर्फ़ियाँ कमाना उसके लिए असाध्य कार्य लगने लगा तो वह निराश हो गया।

इन परिस्थितियों में उसने एक बैरागी को एक साँड के आक्रमण से बचाया। वह ऐसा न करता तो बैरागी निश्चित ही मर जाता। बैरागी उससे बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसके बारे में पूरी जानकारी पायी। फिर कहा "बेटे, इतने कम समय में इतनी बड़ी रक़म कमाने का एक ही मार्ग है। पर यह मार्ग बड़ा ही खतरनाक है। साहस करोगे?"

चक्रधर ने कहा कि इस प्रयत्न में उसकी जान भी चली जाए, इसका उसे दुख नहीं होगा। तब बैरागी ने कहा "नगर से कोस भर की दूरी पर जंगल है। वहाँ के पहाड़ में एक गुफ़ा है। उस गुफ़ा में निधि है। उस निधि में करोडों अशर्फ़ियाँ हैं। एक राक्षस दिन-रात उस निधि की रखवाली करता रहता है। उससे बचकर निधि को पाना असाध्य कार्य है।"

बैरागी के दिये विवरणों के अनुसार चक्रधर तुरंत जंगल चला गया। बहुत ढूँढ़ने के बाद उसने वह गुफ़ा ढूँढ़ ली, जिसमें वह निधि थी।

गुफ़ा के सामने चट्टान की तरह बैठे सो रहा था राक्षस। राक्षस को देखते ही चक्रधर के होश-हवास उड़ गये। फिर भी वह धैर्य समेटकर गुफ़ा के पास गया। जैसे ही वह गुफ़ा के पास पहुँचा, राक्षस जाग गया और उसका हाथ पकड़ लिया। उसने कठोर स्वर में कहा "मुझे चकमा देना चाहते हो? हूँ" कहकर हुँकारने लगा।
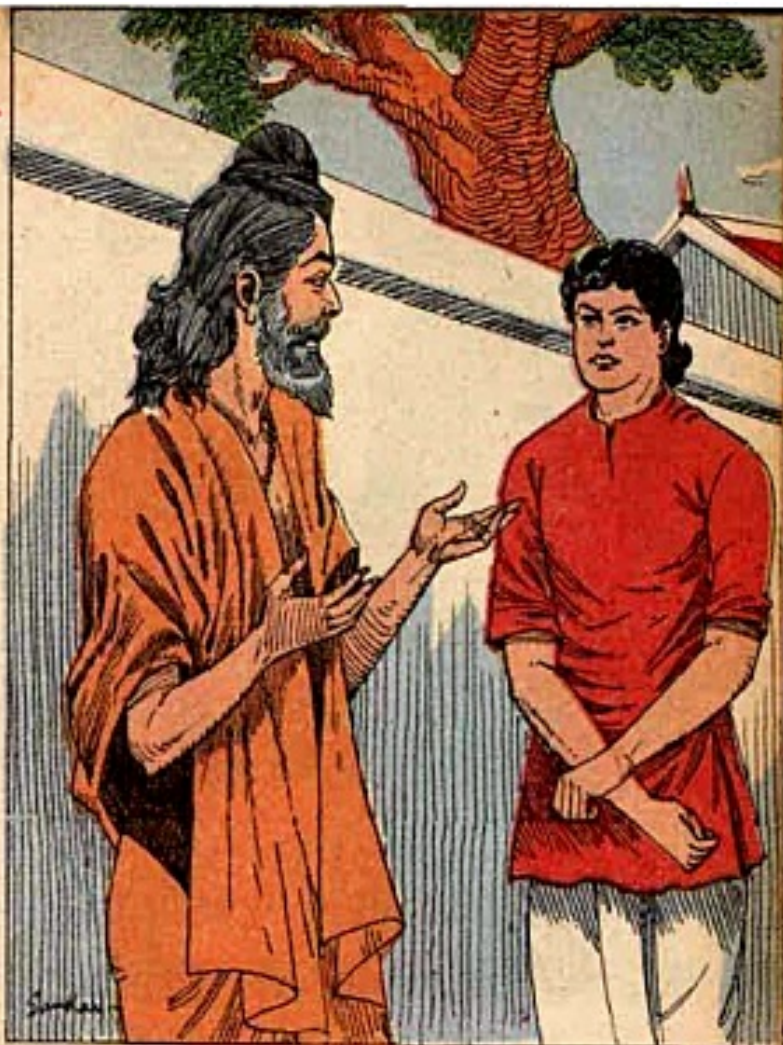
चक्रधर डर तो गया अवश्य। किन्तु अपने लक्ष्य का स्मरण करके अपने आपको संभाला और राक्षस को अपनी कहानी बतायी।

"अच्छा, तुम्हें बैरागी ने भेजा।" कहते हुए राक्षस ने आनंद से सिर हिलाया और चक्रधर को अपनी कहानी सुनाने लगा।

राक्षस के कहे मुताबिक सौदामिनी पूर्व

जन्म में उसकी बेटी थी। उसने उसकी शादी ऐसे आदमी से ज़बरदस्ती की, जिसे वह नहीं चाहती थी।

सौदामिनी ने आत्महत्या की। पूर्वजन्म में जो पाप किया, उसी के कारण वह इस जन्म में राक्षस बना। यह जानते हुए भी कि सौदामिनी उसे नहीं चाहती है, उसके पति ने ज़बरदस्ती उससे शादी की। फलस्वरूप इस जन्म में वह पति बैरागी बनकर जन्मा। दोनों को पूर्वजन्म का ज्ञान है। गत जन्म में उनसे जो पाप हुए, उन्हें धो डालने के लिए ही इस जन्म में प्रयत्नों में लगे हैं। बैरागी, सौदामिनी को सपने में दिखायी पड़ा और चक्रधर से प्रेम करनें के लिए प्रेरणा दी। क्योंकि चक्रधर कोई और नहीं बल्कि पूर्व जन्म में सौदामिनी का प्रेमी ही था।

चक्रधर यह जानकर बहुत ही खुश हुआ और आशा-भरे स्वर में कहा "तब अवश्य ही तुम मेरी मदद करोगे ना?"

"अवश्य। पर तुम्हें मेरा एक उपकार करना होगा" "क्यों नहीं। उपकार नहीं तो अपकार कैसे करूँगा।" चक्रधर ने कहा।

"सुनो, मैं तुम्हें दो लाख अशर्फ़ियाँ दूँगा। तुम्हारी और सौदामिनी की शादी हो जायेगी। किन्तु साल के अंदर तुम्हें एक ऐसी शादी करानी होगी, जहाँ वर और वधु एक दूसरे को नहीं चाहते हों।" राक्षस ने कहा।

"इससे तुम्हें क्या लाभ पहुँचेगा?" चक्रधर ने पूछा। राक्षस एक क्षण रुककर बोला "सावधानी से सुनो। इस गुफ़ा की निधि अक्षय है। इसमें से जितना धन हम लेते रहते हैं, उतना धन फिर जमा हो जाता है। इसीलिए दिन-रात इस निधि की रक्षा करना आवश्यक है। इस जन्म में सौदामिनी की शादी शशिकांत से हो जाती तो उसका पिता अगले जन्म में राक्षस का जन्म लेता। मेरे स्थान पर आ जाता। पारस्परिक प्रेम न होते हुए भी ज़बरदस्ती शादी कराने पर ही मुझे और बैरागी को मुक्ति मिल सकती है। हमारे स्थान में हमारी ही तरह के दो पापियों का जन्म लेना आवश्यक है। अब मेरी आवश्यकता समझ गये ना?"

संकोच-भरे स्वर में चक्रधर ने पूछा "कहीं ऐसी शादी नहीं हो पायी तो?"

उसके इस प्रश्न पर राक्षस ठठाकर हँसता हुआ बोला "बेवकूफ़ कहीं के, ऐसी शादियों को रोकने की सोच रहे हो क्या? कार्य के पूर्ण होने पर समझो, हम दोनों को मुक्ति मिल ही जायेगी। तुम तो जानते ही हो इस गुफ़ा में अक्षय निधि है। इसके लिए एक रखवाले की ज़रूरत है। है कि नहीं? यह तभी संभव होगा जब कि ज़बरदस्ती से किसी की शादी करायी जाए।"

चक्रधर ने कहा "ठीक है, मैं अपने प्रयत्न ज़ारी रखूँगा।"

"अच्छा, इसी प्रयत्न में रहो। यहाँ से निकलकर सीधे घर जाओ। तुम्हारे घर में दो लाख अशर्फ़ियाँ होंगीं। अपनी इच्छा के मुताबिक ही सौदामिनी से शादी करके चैन से ज़िन्दगी गुज़ारते रहो। मुझे दिया हुआ वचन भूलना मत।" राक्षस ने कहा।

उसके बाद वही हुआ जैसे राक्षस ने कहा।

सौदामिनी और चक्रधर की शादी के छे महीनों के बाद वसुदत्त नामक एक व्यक्ति चक्रधर के घर आया और कहा "मेरी बेटी एक गये-गुज़रे के साथ शादी करना चाहती है। मैं इस शादी के पक्ष में नहीं हूँ। पहले तुम भी तो गरीब थे। क्या कोई ऐसा मार्ग है, जिससे मेरी बेटी का प्रेमी तुम्हारी ही तरह धनवान बन सके?"

चक्रधर ने चिढ़ते हुए कहा कि यह बात
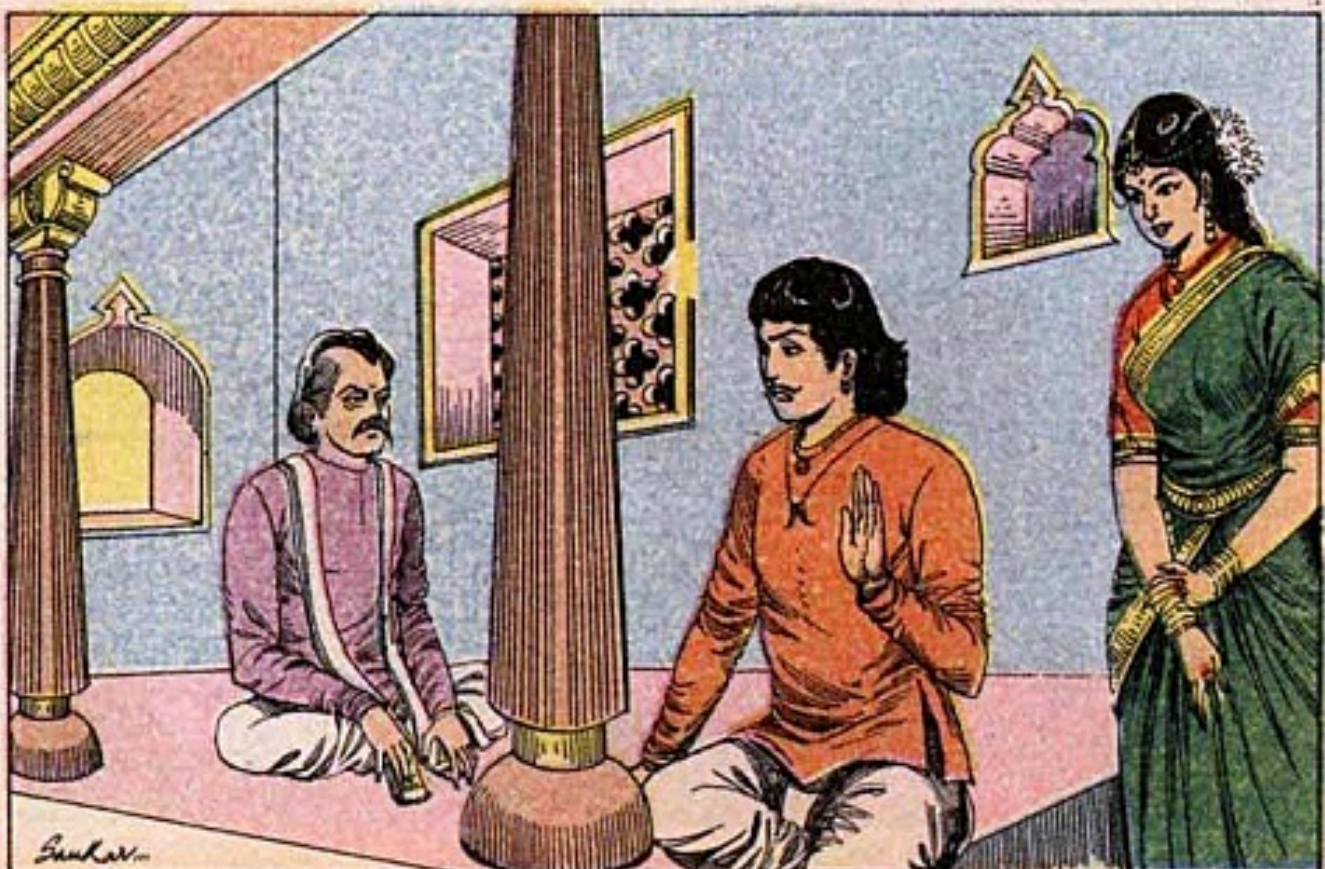
तो तुम्हारी बेटी के प्रेमी को पूछना था, तुम्हें नहीं।

"वह तो किसी भी बात को मानने के लिए तैयार नहीं। वह जिस हालत में है, उसे उसी हालत में स्वीकार करने पर ही शादी करने के लिए राजी है।" वसुदत्त ने कहा। चंद्रधर ने पूछा कि तुम्हारी बेटी क्या कह रही है ?

वसुदत्त ने कहा कि वह धन नहीं चाहती।

चक्रधर ने थोड़ी देर तक सोचकर कहा "छोटी लड़की है। वह यह नहीं जानती कि पैसों में ही परमात्मा है। तुम अपनी बेटी की बातों की परवाह न करो। उस ग़रीब से शादी मत करावो। सौदामिनी और मैं सुखी हैं, इसका कारण धन है।"

वसुदत्त बड़े आनंद से वहाँ से चला गया।

बेताल ने राजा विक्रमार्क को यह कहानी सुनायी और कहा "राजन्, चक्रधर ने वसुदत्त को जो सलाह दी, मेरी दृष्टि में वह कपट तथा द्रोह-बुद्धि से भरी हुई है। जब वसुदत्त की बेटी शादी करने से मना कर रही है, तब उसपर ज़बरदस्ती करना अन्याय है। ऐसा करने पर वह आत्महत्या करने से भी हिचकेगी नहीं। ऐसी सलाह से उसकी कोई भलाई होनेवाली नहीं है। उल्टे ऐसी सलाह दूसरों को हानि ही पहुँचायेगी। मेरे इन संदेहों को दूर नहीं करोगे तो तुम्हारा सिर फट जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा "जिस रखवाले राक्षस ने उसका उपकार किया, उसकी सहायता की और ऐसे राक्षस का ऋण चुकाने की जिम्मेदारी चक्रधर पर है। वह वचन भी दे चुका है कि मैं यह काम करूँगा। वचन से टलना, मुकर जाना पाप है। वसुदत्त पर दया दिखाकर अपने को पापी बनाने की कोई ज़रूरत नहीं। राक्षस की गुफ़ा में अपार आकर्षण शक्ति है। इससे प्रभावित होकर कितने ही वधुओं के पिता वहाँ रखवाले बनने के लिए उतावले तो होंगे ही।"

राजा का मौन-भंग करने में सफल बेताल शव सहित गायब हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार - नलिनी सिन्हा की रचना

गोवा

आलेख : मीरा नायर ◆ चित्र : गौतम सेन

गोवा के जन्म के बारे में एक दंतकथा है कि एक बार महर्षि परशुराम ध्यान रमाने के लिए उपयुक्त जगह तलाश रहे थे. उन्होंने यह सोच कर एक बाण छोड़ा कि जहां भी वह गिरेगा उसी जगह तपस्या करूंगा. बाण अरब सागर में गिरा. बाण का गिरना था कि समुद्र का पानी पीछे गया और एक सुंदर हरा-भर इलाका उभर आया. यह वही इलाका था जिसे आज हम गोवा कहते हैं.

पुरातत्वज्ञों के अनुसार, तीसरी शताब्दी ई. पू. में भी गोवापुर नामक बंदरगाह बहुत महत्वपूर्ण था. वह अरब देशों के साथ होनेवाले समुद्री व्यापार के मार्ग में पड़ता था. पंद्रहवीं सदी तक वहां हिंदू राजाओं का राज था. उसके बाद वह बीजापुर के आदिलशाही सुलतानों के अधीन रहा. सन १५१० में उस पर पुर्तगालियों का कब्जा हो गया. उन्होंने वहां ४५१ वर्षों तक राज किया. १९६१ के दिसंबर में भारतीय सेनाओं ने गोवा में प्रवेश किया और वह फिर से भारत का अंग बन गया.

अल्फांसो [illegible] १५१० में गोवा पर कब्जा किया.

गोवा का समुद्रतट १०५ किलोमीटर लंबा है. उत्तर में *तेरेखोल* से ले कर दक्षिण में *पोलेम* तक कहीं रुपहली-सुनहरी रेत के लंबे-लंबे तट हैं, कहीं चट्टानी पहाड़ियां हैं और कहीं इठलाती-बलखाती नदियां समुद्र से मिलने को दौड़ती नजर आती हैं. पुर्तगालियों ने करीब-करीब समुद्र-किनारे की हर पहाड़ी पर किला बनाया था.

इन किलों में *आग्वाद* का किला सबसे शानदार है. किले में मीठे पानी के कई स्रोत थे, इसलिए पुर्तगालियों ने इसका नाम रखा – *अगुआडा.* ('अगुआ' का अर्थ पुर्तगाली में पानी होता है). हिंद महासागर और अरब सागर की लंबी यात्रा के बाद नाविक अगुआडा का मीठा पानी पी कर तृप्त हो जाते. पुर्तगालियों के समय *अगुआडा* और *रीस मेगोस* किले बंदीगृह थे और आज भी उनका वही उपयोग होता है.

अगुआडा किले की एक दीवार

किलों की ऊंची प्राचीरों को जोड़ते हैं गोवा के मशहूर समुद्री किनारे. *हारमल, चापोरा, वागाटोर, बागा, कलंगूट, अंजुना, गैस्पर डियस और डोना पाउला* उत्तर गोवा के सुप्रसिद्ध बालूतट हैं. उनमें भी कमान के आकार का कलंगूट विदेशी पर्यटकों को बहुत पसंद आता है. डोना पाउला तट का नाम एक वाइसराय की बेटी के नाम पर रखा गया है. अपने मछुआरे प्रेमी से विवाह की अनुमति न मिलने पर उसने इस तट पर स्थित एक चट्टान से कूद कर आत्महत्या कर ली थी.

वेल्हा गोवा यानी पुराना गोवा पणजी से नौ किलोमीटर दूर है. यह सोलहवीं शताब्दी गोवा की राजधानी था. कहते हैं, कभी इसकी शान-शौकत पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन से भी बढ़-चढ़ कर थी. नदी के तीर पर गोवा का प्रतीक, वाइसराय का प्रवेशद्वार (वाइसरॉयज़ आर्च) बना हुआ है. गोवा आनेवाला हर वाइसराय इसी द्वार से गोवा में प्रवेश करता था. इस द्वार का निर्माण खोजी नाविक **वास्को ड गामा** के सम्मान में किया गया था. वास्को ड गामा ने ही यूरोप से भारत तक का समुद्री मार्ग खोजा था. द्वार से कुछ ही दूर संत कजेतान का गिरजाघर है. यह रोम के सेंट पीटर बैसिलिका के नमूने पर बनाया गया है.

डोना पाउला पर भूमि का अंतिम छोर

'से' कैथीड्रल

संत फ्रांसिस ज़ेवियर

संत कजेतान के गिरजाघर के सामने ही बना है ***से कैथीड्रल.*** यह एशिया के सबसे प्राचीन और विशाल गिरजाघरों में से एक है. यहां के घंटे को ***सिनो डो औरो*** अर्थात् सोने का घंटा कहा जाता है. इसकी आवाज बड़ी गंभीर और भारी है.

इन दोनों गिरजाघरों के निकट ही बना है गोवा का सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण गिरजाघर ***बॉम येशू बैसिलिका,*** जिसे संत फ्रांसिस ज़ेवियर का गिरजाघर भी कहते हैं. गोवा के प्रधान संत फ्रांसिस ज़ेवियर का शरीर इसी गिरजाघर में रखा हुआ है.

बॉम येशू बैसिलिका

फ्रांसिस ज़ेवियर का जन्म अप्रैल १५०६ में नवारे (स्पेन) में हुआ . कालेज में पढ़ते वक्त ही अपने एक सहपाठी इग्नेशियस लॉयोला से प्रभावित हो कर उन्होंने आजीवन प्रभुसेवा का निश्चय किया. ६ मई १५४२ को वे गोवा पहुंचे. वे कोंकणी और बोलचाल की पुर्तगाली भाषा में ईसाई धर्म का प्रचार करते थे. उन्होंने गोवा में कुछ ही महीने रह कर ईसा मसीह के उपदेश आम लोगों तक पहुंचाये. यहां से उन्होंने तमिलनाडु के तटीय इलाके, श्रीलंका, आदि की यात्रा की. फिर वे जापान गये, वहां से चीन. चीन में ही उनकी मृत्यु ३ दिसंबर १५५२ को सांचियान द्वीप पर हुई. दो बरस बाद जब कब्र में से उनका शव बाहर निकाला गया, तो यह देख कर लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसमें जरा-भी खराबी नहीं आयी है. उसे गोवा लाया गया.

आज, इतने वर्षों बाद भी संत ज़ेवियर की मृत देह में किसी प्रकार की विकृति नहीं आयी है. हां, वह काफी सिकुड़ गयी है. हर दस बरस में एक बार उसका जुलूस बॉम येशू गिरजाघर से 'से' कैथीड्रल तक निकाला जाता है. तब दुनिया-भर से लाखों भक्त ईसाई यहां जमा होते हैं.

बॉम येशू गिरजाघर के सामने एक अन्य पहाड़ी पर संत मोनिका का गिरजा और कान्वेंट (साध्वीमठ) है. पूर्व एशिया में यह ईसाई साध्वियों का सबसे बड़ा आवासगृह (ननरी) है.

गोवा कृषिप्रधान राज्य है. धान यहां की मुख्य उपज है.

गोवा की राजधानी ***पणजी*** मांडवी नदी के दक्षिण-तट पर बसी है. वहां का पुराना सचिवालय भवन गोवा की सबसे प्राचीन इमारत है. वह कभी आदिलशाह का महल था. उसके बायीं तरफ गोवा के सम्मोहन-वैद्य ***आबे फ़ारिआ*** की कांसे की बनी मूर्ति है. उनका पूरा नाम ***जोसे कस्याडियो डि फ़ारिआ*** था. उन्होंने युवावस्था में ही गोवा छोड़ कर पुर्तगाल में पढ़ाई की और पादरी, वैज्ञानिक और चिकित्सक बने. उन्हें सम्मोहन-विद्या का जनक माना जाता है. उन्होंने ही सबसे पहले यह बताया था कि सम्मोहन एक तरह का विज्ञान है और उससे सुझाव के जरिये रोगी के मन पर नियंत्रण करके उसका शारीरिक इलाज भी किया जा सकता है. कुछ लोग मानते हैं कि फ्रांसीसी उपन्यासकार अलैग्ज़ैंडर ड्यूमा ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास ***द काउंट आफ़ मांटे क्रिस्टो*** में पागल साधु का वर्णन आबे फ़ारिआ को देख कर ही लिखा था.

अबे फ़ारिआ की मूर्ति

पणजी के दक्षिण-पूर्व में कुछ किलोमीटर दूर शिव का प्रसिद्ध ***मंगेशी*** मंदिर है. मंदिर के नाम की कहानी कुछ इस प्रकार है. एक बार कैलास पर्वत पर शिव और पार्वती में कुछ तकरार हो गयी और पार्वती रूठ कर धरती पर चली आयीं. जब वे यहां वन में घूम रही थीं, एक बाघ उनके मार्ग में आ गया. पार्वती के मुख से निकला, ''त्राहि मां गिरीश!'' इस प्रकार उस स्थान पर बने मंदिर का नाम ***मां गिरीश*** पड़ गया, जो बाद में बिगड़ कर ***मांग्रीश*** और फिर ***मंगेशी*** हो गया.
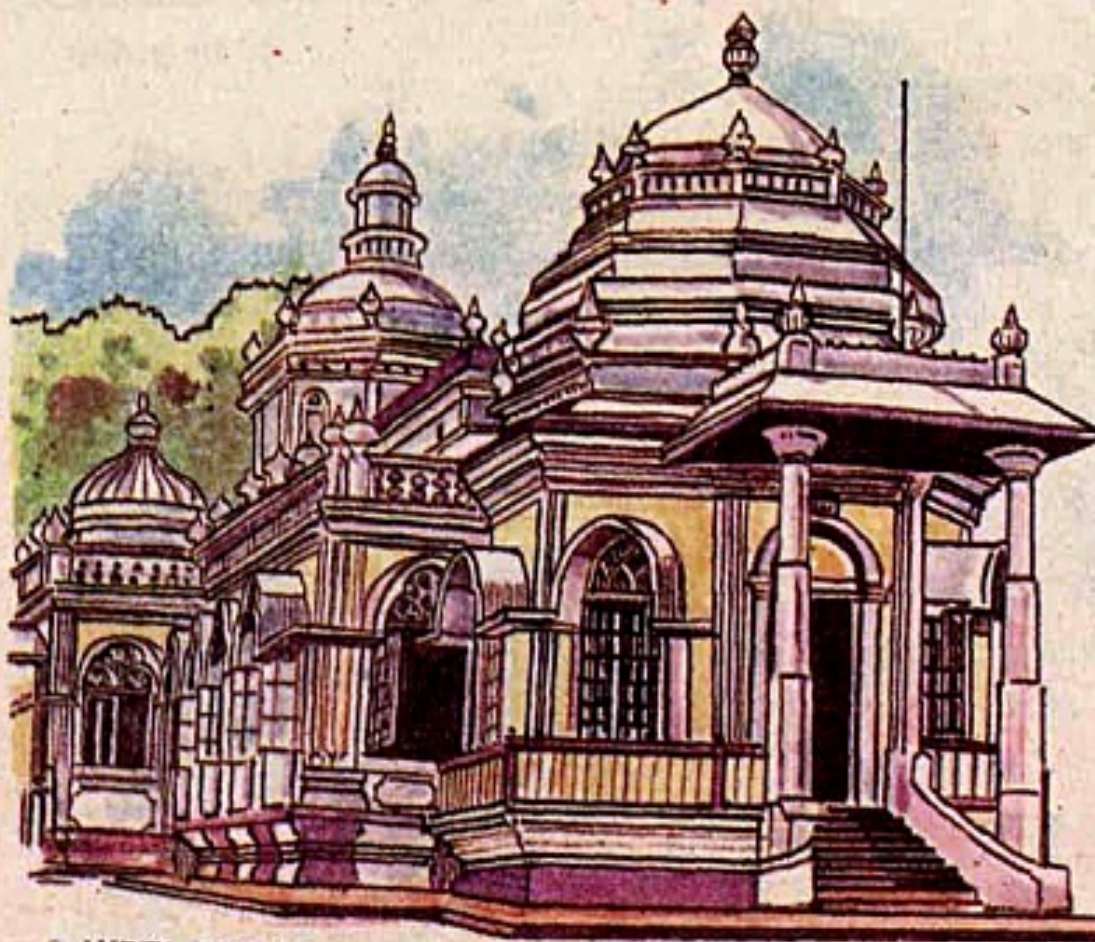
श्री मंगेशी मंदिर

चिंतन-पद्धति

वृंदावन में श्रीनाथ नामक पंडित गुरुकुल चलाता था। गदाधर और विद्याधर उसके शिष्य थे। उन दोनों में घनी दोस्ती थी।

पढ़ाई ख़तम होने के बाद दोनों अलग हो गये। गदाधर ने गाँव लौटकर एक स्कूल की स्थापना की। वहाँ के सब लोग उसकी पढ़ाने की पद्धति की तारीफ़ करने लगे। उसकी ठोस कमाई को देखकर उसी गाँव के एक आदमी ने अपनी बेटी दमयंती की शादी उससे करायी। दमयंती ने फूल जैसे एक सुँदर बच्चे को जन्म दिया। दंपति उसे लाड़-प्यार से पालने लगे। उसका नाम रखा गया सुँदर।

विद्याधर अपनी पत्नी अनसूया और दो वर्ष की आयु के अपने बेटे चंद्र को लेकर गदाधर के यहाँ आया। दोनों मित्र लंबे अर्से के बाद मिले। दोनों ने एक दूसरे की गतिविधियाँ जानीं। गदाधर ने जब अपने बारे में पूरा-पूरा बताया तो विद्याधर ने कहा कि व्यापार में मैंने खूब कमाया। उसने गदाधर को अपने यहाँ आने का न्योता दिया।

इधर दोनों मित्र बातों में लगे हुए थे तो उधर उन दोनों की पत्नियाँ भी बातों में मशगूल हो गयीं। बच्चों की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया। अचानक चिल्लाहट सुनायी पड़ी। सुँदर ने चंद्र को मारा, इसलिए वह ज़ोर से चिल्ला पड़ा।

विद्याधर ने चंद्र को उठा लिया और कहा "गदाधर, लगता है, तुम्हारे बेटे को बात-बात पर हाथ उठाने की आदत है। यह आदत अच्छी नहीं।"

गदाधर ने हँसते हुए कहा "हाँ, यह सच है। बहुत कोशिश की, पर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इसीलिए छोटे बच्चों से दूर ही रखते हैं। आज ही भूल गये।"

विद्याधर ने नाराज होकर कहा "हँसते क्यों हो? पहले अपने बेटे की यह बुरी आदत

प्रेमा राठौर

समझता। फिर भी हर दिन उससे कहता ही रहता हूँ। मेरा विचार है कि एक-दो सालों में वह भी उसकी समझ में आ जायेगा।''

विद्याधर ने कहा ''तुम्हारे बेटे के स्वभाव को देखते हुए ऐसा नहीं लगता कि वह समझ जाएगा, उसकी आदत छूट जायेंगी। लगता है कि आप लोग भी उसे समझा नहीं रहे हैं।''

दूसरे ही दिन विद्याधर और उसका परिवार चला गया। परंतु गदाधर को अपने बेटे की चिंता सताने लगी। विद्याधर को वह बहुत मानता है, इसलिए उसी दिन से बेटे को सुधारने की कोशिश में लग गया। बस, सुँदर छोटी-सी भी शरारत कर दे तो उसे खूब पीटता था। इससे उसकी शरारत कम नहीं हुई। वह पिता के पास आता ही नहीं था। पिता को देखते ही भय से कांप उठता था।

इस घटना के कुछ दिन बाद गुरु श्रीनाथ, गदाधर के घर आया। उसने शिष्य से कहा ''शिष्य पुत्र-समान है। मैं अपने पोते को देखना चाहता हूँ। ज़रा ले आना।''

गदाधर ने पत्नी को बुलाया और खुद बाहर चला गया। शिष्य को यों चले जाते हुए देखकर गुरु आश्चर्य में पड़ गया। गदाधर की पत्नी सुँदर को ले आयी। गुरु ने बच्चे को चूमा और प्यार से उससे बातें करने लगा। शिष्य को बुलाने को कहा तो उसकी पत्नी ने कहा कि वे नहीं आयेंगे, क्योंकि सुँदर उन्हें

छुडाओ।''

गदाधर ने हँसते हुए ही कहा ''दो वर्षों की आयु का बच्चा क्या समझेगा? उसे कैसे समझा सकते हैं।'' विद्याधर चिढ़ता हुआ बोला ''चंद्र को भी ऐसी ही आदत पडी थी। उसके पहले ही साल में मैंने उसे खूब पीटा। बस, तब से वह चुप हो गया।''

तब जाकर गदाधर की समझ में आया कि उसका दोस्त अब तक गंभीरता से ही बात कर रहा है। इसका उसे थोड़ा रंज हुआ और उसने कहा ''मेरा बेटा बड़ा अक़्लमंद है। कहानी सुनाऊँ तो समझ जाता है। गीत गाऊँ तो जान जाता है। परंतु नटखटपन के बारे में कितना भी कहूँ, समझाऊँ, नहीं

देखते ही भय से कांपेगा। दमयंती ने गुरु से पूरी बात कही।

गुरु श्रीनाथ ने शिष्य गदाधर को बुलवाया और डॉटते हुए कहा "कहीं तुम्हारी मति भ्रष्ट तो नहीं हो गयी? किसी की बात पर विश्वास करके अपने ही बेटे से राक्षस की तरह बरताव कर रहे हो?"

गदाधर ने सविनय कहा "गुरुवर, विद्याधर कोई और नहीं। वह मेरा आदर्श मित्र है। उसकी हर बात के पीछें कोई न कोई अर्थ होता है और मैंने यह जाना विद्याभ्यास के समय अपने अनुभवों के आधार पर।"

श्रीनाथ मुस्कुराकर बोला "विद्याधर की विचारधारा के बारे में तुमसे ज़्यादा मैं जानता हूँ। परंतु तुम नहीं जानते कि कुछ लोग अपनी संतान को हद से ज़्यादा चाहते हैं। इस हद से ज़्यादा चाहने की ही वजह से इस दुनिया में भयानक अपराध होते हैं। विद्याधर की बातों पर ध्यान मत दो। बच्चे मार-पीट से नहीं, प्यार से, मीठी बातों से सुधरते हैं, वश में आते हैं। जब-जब सुँदर शरारत करेगा, तब-तब उससे कहते रहना कि उसने क्या शरारत की।" किन्तु गदाधर की शंका अब भी दूर नहीं हुई। श्रीनाथ ने क्रोधित होकर कहा "चलो, हम दोनों विद्याधर से मिलने जाएँगे। तुम्हारी शंका बिल्कुल दूर हो जायेगी।"
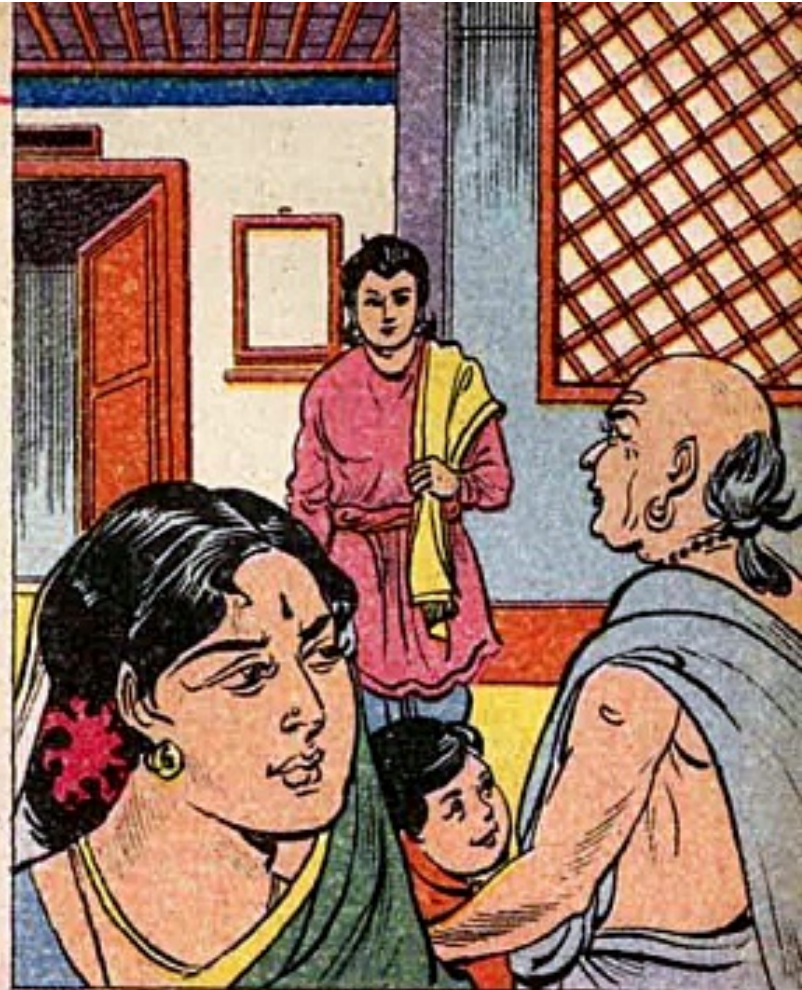
गंगाधर और श्रीनाथ दोनों निकले और शाम तक विद्याधर के घर गये। विद्याधर ने गुरु और मित्र का बड़ा आदर-सत्कार किया।

बातों-बातों में श्रीनाथ गदाधर के बेटे सुँदर की प्यार-भरी चेष्टाओं का बखान करने लगा। विद्याधर ने असहनशील हो कहा "शरारती बच्चों को मैं पसंद नहीं करता। सुँदर ने जो शरारत की, वह मैं ज़िन्दगी भर नहीं भूल सकता।"

"बेटे, हँस दूध और पत्नी को अलग करके खुश होता है। क्या मानव शिशु की शरारतों को उनकी प्यार-भरी चेष्टाओं से अलग करके खुश नहीं हो सकता?" गुरु के इस प्रश्न का विद्याधर ने कोई जवाब नहीं दिया।

रात को विद्याधर की पत्नी अनुसूया नें पत्तों में भोजन परीसा और उन्हें बुलाया। सब खाने में जुट गये। उस समय चंद्र पानी का एक लोटा हाथों में लेकर इधर-उधर घूम रहा था।

श्रीनाथ यह देखकर घबरा गया और कहा "वह शायद पानी लुढ़का देगा। उसके हाथ से वह लोटा ले लो।"

अनुसूया लोटा उसके हाथ से छीनने ही वाली थी कि विद्याधर ने उसे रोका और कहा "ऐसा मत कर। वह रोयेगा। उसका रोना मैं देख नहीं सकता। लोटा तो वह अच्छी तरह से थामे हुए है, घबराने की कोई बात नहीं।"

इतने में चंद्र ने अपने पिता के पत्ते में लोटे का पूरा पानी उँडेल दिया। विद्याधर फ़ौरन उठने ही वाला था तो श्रीनाथ ने उसे रोका और कहा "नहीं बेटे, वह छोटा बच्चा है। वह क्या जाने? उसे मारो मत।"

विद्याधर चकित होकर बोला "इतनी छोटी-सी बात पर मैं चंद्र को मारूँगा, यह कैसे आप जान गये? मैं उठा, पत्ते के पानी को उछालने के लिए।"

श्रीनाथ ने गदाधर की ओर नाराज़ी से देखने का नाटक करते हुए कहा "देखा, तुमने तो कहा था कि शरारत करने पर विद्याधर अपने बेटे को पीटता है। पर तुम्हारी बात झूठ निकली। अब ही सही, अपनी ग़लती मान लो।"

यह सुनकर विद्याधर निश्चेष्ट रह गया। वह जान गया कि गुरु गदाधर को लेकर यहाँ क्यों आये? उसने कहा "अब जान गया कि गदाधर के घर में उस दिन छोटी-सी बात को कितनी बड़ी बना दी। राई का पर्वत बना दिया। गुरुवर अब आप ही बताइये कि अपनी ग़लती कैसे सुधारूँ?"

शिष्य के प्रश्न पर गुरु खुश होता हुआ बोला "दूसरों के बच्चों में अपने बच्चे को देखो। अपने बेटे को दूसरे का बेटा मानो। तब तुम्हारी चिंतन-पद्धति संतान-प्रेम के चंगुल से छुटकारा पायेगी।"

इसके बाद गदाधर और विद्याधर की मैत्री में उनके बच्चे रुकावट नहीं बने।

चन्दामामा
सुवर्ण रेखाएँ
अंतरिक्ष का भीकर मृग
भारत का सर्वप्रथम व्योमगामी सूर्य चंद्र पर उतरा।
अकस्मात्
घर्र्र्र्र
क्या है यह?
आवाज़ सुनकर सूर्य ने मुड़कर देखा।
घर्र्र्र्र
आहा
घर्र्र्र्र
सूर्य ने उसी क्षण लेज़र ब्लास्टर से जला दिया।
भीकर मृग मर गया।
इस कहानी को बताने में कहानीकार ने क्या गलती की?
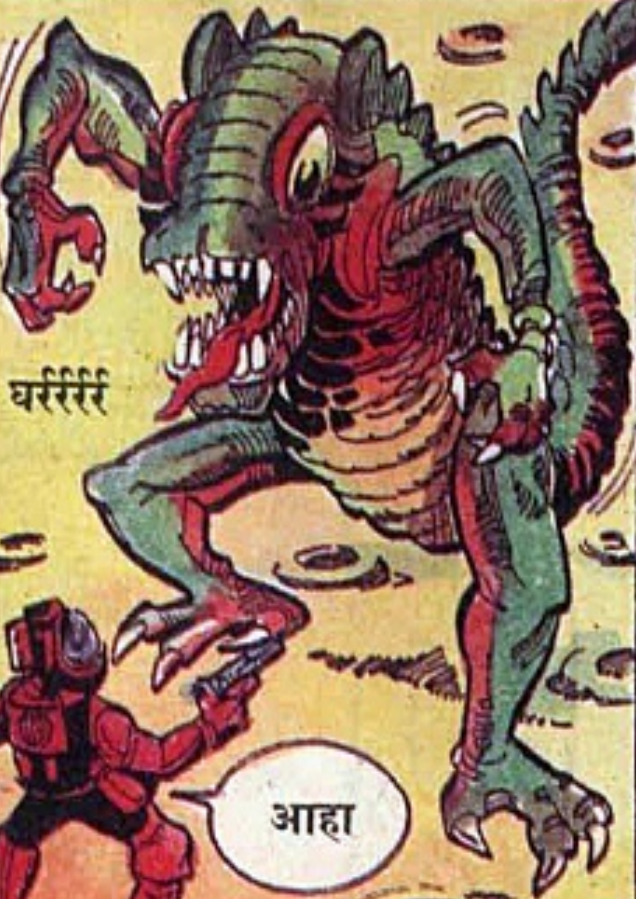
सुवर्ण रेखाएँ
प्रश्नावली
१. भारत के सर्वप्रथम व्योमगामी को ऊपर से हमारा देश कैसे दिखायी पड़ा? जब उससे यह प्रश्न पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि 'सारे जहाँ से अच्छा'। उस व्योमगामी का क्या नाम है? किस साल वह अंतरिक्ष में गया?
३. हिलते हुए इस चट्टान के टुकड़े को सेरेस कहते हैं। इसकी नाप करीबन ९५० कि. मीटर है। यह चट्टान कहाँ है? इसकी ख़ासियत क्या है?
७. इनके पहनावों के आधार पर क्या तुम बता सकोगे कि ये लोग हमारे देश के किन-किन प्रांतों के निवासी हैं?

४. श्रीकृष्ण, उसके बड़े भाई बलभद्र, बहन सुभद्रा की काठ से बनी ये मूर्तियाँ बारह शताब्दी की हैं। एक ही मंदिर में तीनों की पूजा होती है। इस सुप्रसिद्ध मंदिर का नाम क्या है?
५. १९९६, फरवरी, पहली तारीख को एक मेंढक ३० मीटरों की गहराईवाले कुएँ से बाहर आने की कोशिश में लगा रहा। हर दिन वह तीन मीटर चढ़ता गया। किन्तु रात के समय दो मीटर पीछे फिसल जाता था। क्या बता सकते हो कि इस प्रकार की कोशिशों से वह किस महीने की किस तारीख को बाहर आ पाया ?
२. नवाब राजा जयसिंग ने हमारे देश में पहले पहल नक्षत्र गणितशाला, जंतरमंतर का निर्माण किया। उसके बाद जयपुर, मथुरा, उज्जयिनी, वाराणसी में इस प्रकार के भवनों का निर्माण-कार्य हुआ। ई.स. १७२८ में उन्होंने दुनिया के सबसे बड़े कहे जानेवाले सनड्येल (सूर्य घड़ियाल) का निर्माण किया। बता सकते हो, इसका क्या नाम है?
34+41=1
६. दो दियासलाइयों को बदलकर रखने से इस समीकरण को (ईक्वेशन) को सही बना सकते हैं। कोशिश करके देखिये ना।

३-डि मुखौटा तैयार कर लीजिये

१. रबड के गुब्बारे को लीजिये। उसे इतना फूंकिये कि वह आपके सिर से परिमाण में थोड़ा बड़ा हो। बाद धागे से गुब्बारे की नोक को बाँध दीजिये, जिससे हवा ना जाए।

२. एक कागज़ लीजिये। उसे ३ सें मी २ सें मी के हिसाब से छोटे-छोटे टुकड़ों में कैंची से काटिये।

३. नीचे थोड़ी-सी जगह छोड़ दीजिये और बाकी गुब्बारे पर इन टुकड़ों को एक-एक करके चिपकाइये। सूख जाने पर उन टुकड़ों पर एक और परत टुकड़ों को चिपकाइये। इस परत के सूब सूख जाने के बाद फिर से एक और एक-एक कागज़ के टुकड़े को उसपर तीसरी बार चिपकाइये।

४. कागज़ों की परतों के सूख जाने के बाद गुब्बारे की हवा छोड़ दीजिये। फिर गुब्बारे को कागज़ की परत से धीरे-धीरे- बाहर खींचिये। अब आपको खाली दोना मिलेगा। उस दोने के नीचे इतनी-सी जगह पाने के लिए कतरिये, जिसमें आप अपना सिर घुसा पायें।

५. इसके बाद आँखों व नाक के लिए जरूरी छेद बना लीजिये। अब पैंट तथा रूप-सज्जा की सामग्रियों का उपयोग करके मुखौटे को आप जैसा रूप देना चाहते हैं, दीजिये। यहाँ आपके लिए कुछ नमूने है।

तीन आसान क्रमों में हाथी की तस्वीर खींचिये।
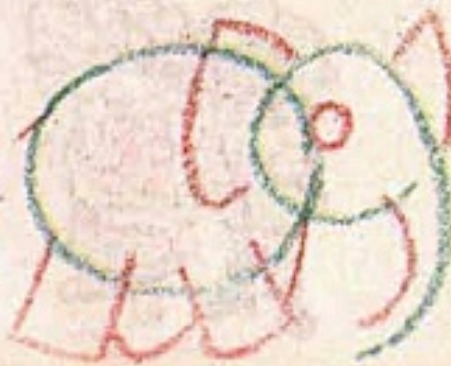
महाभारत

दुर्योधन में पाँडवों के प्रति ईर्ष्या बढ़ती ही जा रही थी। इस कारण उसका स्वास्थ्य भी खराब होता गया। वह दुबला-पतला हो गया। उसकी स्थिति से व्याकुल शकुनि ने पूछा "दुर्योधन, क्यों इस तरह तुम क्षीण होते जा रहे हो? कौन-सी चिंता तुम्हें खाये जा रही है ?"

दुर्योधन ने कहा "मामा, क्या कहूँ और कैसे कहूँ? अर्जुन के पराक्रम के आधार पर धर्मराज ने भूमंडल पर विजय पायी। राजसूय यज्ञ करके सम्राट बन गया। सब राजा उसके अधीन हैं। कृष्ण ने, शिशुपाल का जब भरी सभा में वध किया, तब किसी एक ने भी मुँह नहीं खोला, अपना विरोध प्रकट नहीं किया। सब राजा रत्नों की राशियाँ ले आये और धर्मराज को समर्पित कीं। पाँडवों का वैभव वर्णनातीत है। उनके ऐश्वर्य के सम्मुख मेरी कोई हस्ती नहीं रही। आपने तो खुद ही देख लिया कि मयसभा में उन्होंने मेरा कितना मज़ाक उड़ाया, अपमानित किया। जीवन दुर्भर हो गया। मेरी पीडा मेरे पिताश्री को बताना।"

शकुनि ने दुर्योधन से कहा "पाँडवों की संपदा देखकर तुम क्यों जले जा रहे हो? उन्होंने जो संपदा पायी, सक्रम ही है। दैवबल उन्ही की तरफ़ अधिक है। इसी कारण उन्हें नाश करने के तुम्हारे सब प्रयत्न विफल हो गये। द्रौपदी उनकी धर्मपत्नी बनी, इसे उनका भाग्य ही कहा जा सकता

जुआ

हो? क्यों समझते हो कि तुम्हारा अपना कोई नहीं है। सच कहा जाए तो तुम्हारे बल के सामने उनकी क्या गिनती? तुम्हारे ९९ भाई हैं। धनुर्विद्या के प्रवीण द्रोण तुम्हारे साथ हैं। समस्त शस्त्रों के ज्ञाता अश्वथ्थामा, कर्ण, कृपाचार्य और स्वयं मैं तुम्हारे हैं।"

"तब विलंब क्यों? अपनी सेना लेकर जाएँगे और पाँडवों को हराकर मयसभा हस्तिनापुर उठा ले आयेंगे" दुर्योधन ने कहा।

"दुर्योधन, पाँडवों को जीतना सुलभ कार्य नहीं। आखिर युद्ध क्यों करें? उससे भी आसान उपाय मैं बताऊँगा। धर्मराज

है। द्रुपद उनका सबल सहारा बन गया। कृष्ण की बात तो कहने की कोई आवश्यकता ही नहीं। बाल्यकाल से ही वह पाँडवों की रक्षा व सहायता में मग्न है। खांडव वन के दहन के फलस्वरूप अग्निदेव ने अर्जुन को गांडीव, अक्षय तूणीर और दिव्यास्त्र प्रदान किये। उन्ही के आधार पर सब राजाओं को अपने वश कर लिया। खांडव वन के दहन ही के कारण उन्हें मयसभा भी प्राप्त हुई। इसमें क्या अधर्म है, क्या अनीति है? हाँ, यह बात सच है कि पाँडव वर-पुत्र हैं, पर तुम क्यों इतना अधीर हो रहे हो? अपने आपको छोटा समझने की प्रवृत्ति को क्यों बढ़ावा दे रहे

जुआ बहुत पसंद करता है। उसे जुए पर बुलाओ। उसे मैं हराऊँगा और उसका राज्य और संपदा तुम्हारे हाथ सौंपूंगा। पर इसके लिए तुम्हें अपने पिताश्री धृतराष्ट्र की अनुमति पानी होगी।"

शकुनि को लेकर दुर्योधन, धृतराष्ट्र के पास गया। तब धृतराष्ट्र, धर्मराज से संपन्न राजसूय यज्ञ के बारे में जानकारी प्राप्त कर रहा था और अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहा था। शकुनि ने तब उससे कहा "हमारा दुर्योधन बहुत ही व्याकुल है। दुबला-पतला हो गया है। उसका मुखमंडल मुरझा गया है।"

यह सुनकर धृतराष्ट्र को धक्का लगा।

बड़े प्रेम से दुर्योधन को अपने पास बिठाया, उसकी पीठ फेरी और पूछा "इस प्रकार क्यों दुबले-पतले हो गये? कारण क्या है?"

दुर्योधन ने कहा "पिताश्री, अपने मन की व्यथा क्या कहूँ? कही नहीं जाती। भोजन रुचिकर नहीं लगता। शत्रुओं के वैभव व ऐश्वर्य को देखकर मैं दुखी हूँ। धर्मराज जैसा संपन्न राजा न ही कभी था और है। मेरे स्वास्थ्य के क्षीण होने का यही कारण है।"

बाद शकुनि ने जान-बूझकर धृतराष्ट्र की उपस्थिति में दुर्योधन से कहा "दुर्योधन, धर्मराज को जुआ खेलने की लत है, पर उस खेल में वह प्रवीण नहीं। मैं जुए में सिद्धहस्त हूँ। अपनी युक्ति से मैं धर्मराज की समस्त संपदाएँ तुम्हारे सुपुर्द करूँगा। युद्ध अथवा जुआ खेलने के लिए आह्वानित करने पर आना क्षत्रिय-धर्म है। धर्मराज इस क्षत्रिय-धर्म को किसी भी परिस्थिति में निभायेगा। हमारे बुलाने पर आवश्य ही वह जुआ खेलने आयेगा।"

दुर्योधन अपने पिता के पैरों पर गिर पड़ा और शकुनि की मांग की अनुमति देने के लिए गिड़गिड़ाने लगा, आँसू बहाने लगा।

धृतराष्ट्र ने दुर्योधन से कहा "विदुर की सलाह लेंगे और निर्णय करेंगे कि हम क्या करें?"

"विदुर किसी भी स्थिति में इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा। अगर आप अनुमति नहीं देंगे तो मेरे जीने का प्रश्न ही नहीं उठता। मेरे मरने के बाद आप और विदुर इस राज्य को अपने सिर पर उठा लीजिये और संभालिये।" दुर्योधन ने कर्कश स्वर में बता दिया। पुत्रमोह के कारण धृतराष्ट्र, दुर्योधन के प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं कर सका। उसने शिल्पाचार्यों को बुलाया और उन्हें आदेश दिया कि मयसभा का निर्माण हो। उसने उनसे कहा "इस मयसभा में हजार स्तंभ हों, सौ दरवाज़े हों, रंगबिरंगे शिल्पों से भरा मंडप हो?" बाद उसने विदुर को बुलाया, पर अपने मन की बात उससे छिपायी और इतना ही

कहा कि धर्मराज को जुआ खेलने आह्वानित करना है। विदुर ने स्पष्ट शब्दों में धृतराष्ट्र से बताया "मैं इसके पक्ष में नहीं हूँ। जुए के कारण भाई-भाइयों में शत्रुता की भावना पनपेगी। अच्छा यही होगा कि इस दिशा में हम कोई क़दम न बढ़ाएँ।"
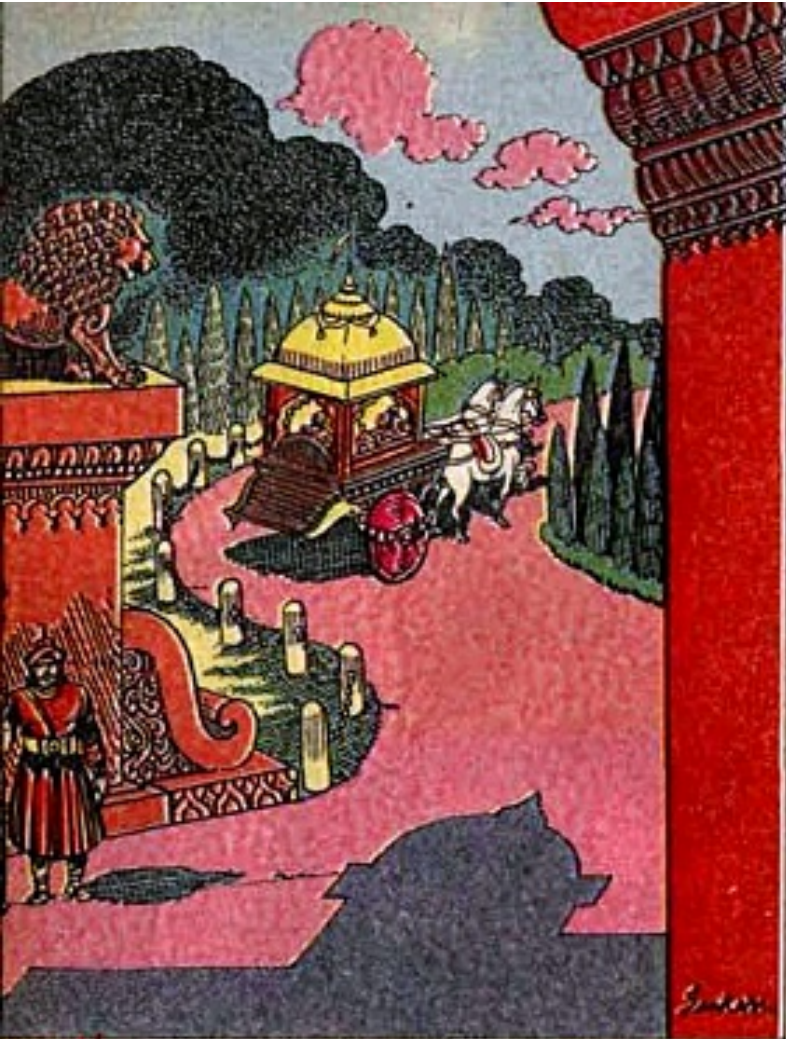
धृतराष्ट्र ने कहा "विदुर, इससे अच्छाई भी हो सकती है, बुराई भी। पर किसी भी स्थिति में यह जुआ स्नेहपूर्वक हो। मैत्री के वातावरण में हो। पुत्रों के बीच अगर शत्रुता का प्रश्न उठ खड़ा भी हो जाए तो मैं, तुम, भीष्म, द्रोण सबके सब हैं। परिस्थिति को संभालेंगे। जागरूक रहेंगे। तुम इंद्रप्रस्थ जाओ और धर्मराज को यहाँ ले आओ।"

पितामह भीष्म से यह बात बताने और उसकी राय लेने के लिए विदुर निकल पड़ा। उसके चले जाते ही धृतराष्ट्र ने अपने बेटे को समझाया कि जुए की बात भुला दो। चाहो तो तुम भी राजसूय यज्ञ करो और सम्राट बनो। पर दुर्योधन टस से मस न हुआ। शकुनि ने कहा कि जुआ भी युद्ध के ही समान है। जीत और हार युक्ति व बुद्धि-बल पर निर्भर हैं।

इस बीच धृतराष्ट्र के कहे अनुसार हस्तिनापुर में भी एक बहुत बड़ा सभा-भवन निर्मित हुआ। धृतराष्ट्र ने विदुर को आज्ञा दी कि वह स्वयं जाए और स्नेहपूर्वक जुआ खेलने धर्मराज को बुला लाए।

विदुर जानता था कि ग़लत है। पर वह क्या करे? आज्ञा का उल्लंघन करना राजद्रोह है। वह इंद्रप्रस्थ गया। धर्मराज ने उसका स्वागत-सत्कार किया और पूछा "विदुरश्री, कुशल हैं? आपका मुख क्यों मुरझाया हुआ है? धृतराष्ट्र, दुर्योधन आदि सकुशल हैं ना?" उत्तर में विदुर ने कहा "सब सकुशल हैं। तुम्हारी मयसभा जैसी एक मयसभा का निर्माण हस्तिनापुर में भी हुआ है। राजा धृतराष्ट्र चाहते हैं कि तुम कुछ दिन वहाँ गुज़ारो और दुर्योधन से स्नेहपूर्वक जुआ खेलते रहो।

उनका कहना है कि तुमसे जुआ खेलने

पर ही उन्हें और उनके पुत्रों को सुख-प्राप्ति होगी। उन दुष्टों की इच्छा पूर्ण करो।''

धर्मराज ने कहा ''नहीं, नहीं, इससे तो मित्र भी शत्रु हो जाएँगे। बैर की भावना बढ़ जायेगी। आप इस विषय में अपना अभिप्राय बताइये। आप जैसे कहेंगे, वैसा करने मैं सन्नद्ध हूँ।''

''मैंने उस अंधे वृद्ध राजा को बहुत समझाया कि जुआ कलह का कारण बनता है। पर उन्होंने मेरी बात अनसुनी कर दी और तुम्हें बुला लाने मुझे यहाँ भेजा। तुम्ही अच्छी तरह से सोचो-विचारो और निर्णय लो।'' विदुर ने धर्मराज से कहा।

धर्मराज ने पूछा ''जुआ खेलने के लिए वहाँ कौन इतना तड़प रहे हैं?'' विदुर ने कहा ''शकुनि, विवंशती, चित्रसेन, सत्यव्रती, पुरमित्र जय।''

''अच्छा, तो सब जुआरी एक जगह पर इकट्ठे हो गये। मेरी शंका है कि कोई उपद्रव होगा। किन्तु क्या करें, बड़ों के पुकारने पर जाना भी तो चाहिये। मेरा तो नियम है कि जुआ खेलने के लिए बुलाने पर जाना ही चाहिये। ऐसे तो मुझे भय हो रहा है, पर आऊँगा अवश्य। कल निकलूँगा।''

जाने की तैयारी हुई। धर्मराज अपनी पत्नी और भाइयों को लेकर हस्तिनापुर पहुँचा। धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, अश्वथ्थामा जैसे बड़ों को नमस्कार किया। गांधारी का कुशल-मंगल जाना। द्रौपदी

के मुख पर विराजित महारानी के लक्षण देखकर दुर्योधन आदि की पत्नियाँ ईर्ष्या से जल उठीं ।

दूसरे ही दिन सबेरे धर्मराज शकुनि, दुर्योधन, दुश्शासन जुआ खेलने के कक्ष में आये और सबको प्रणाम किया । तब शकुनि ने धर्मराज से कहा "तुम्हें देखने के लिए इस सभा में कुछ लोग आये हैं । कुछ लोग तो तुमसे जुआ खेलने आये हैं । परंतु नियमबद्ध होकर जुआ आरंभ करेंगे ।"

धर्मराज ने कहा, "शकुनि, जुआ में धोखा देना अक्षम्य अपराध है । ऐसा करने पर वह क्षत्रिय कहलाने योग्य नहीं । अतः धोखे से हमें जीतने का प्रयत्न मत करो । हमने जो भी कमाया, उसका उपयोग ब्राह्मणों के संरक्षण के लिए तथा दुष्टों को दंड देने के लिए कर रहे हैं ।"

"वेदाध्ययन में समर्थ क्षत्रिय किसी और क्षत्रिय को वेदाध्ययन में हराता है । अतः ठगनेवाले जुआरी को ठगना कोई ग़लत बात नहीं है । यह तो सहज है । जुआ खेलने की तुम्हारी इच्छा नहीं है तो मत खेलो" शकुनि ने कहा ।

धर्मराज में रोष उभर आया और कहा "जुआ खेलने बुलाया गया हूँ । पीछे मुड जाना अनादर है, इसलिए खेलूँगा, अवश्य खेलूँगा । कौन खेलेगा मुझसे?"

"मेरा प्रतिनिधि बनकर मेरे मामा खेलेंगे । वह जो भी बाज़ी लगायेंगे, उसे देने की जिम्मेदारी मेरी है ।" दुर्योधन ने कहा ।

"कोई किसी का प्रतिनिधि बनकर खेले, मैंने कभी न ही देखा, न ही सुना । यह तो कुछ विलक्षण-सा ही लग रहा है । फिर भी, आप लोगों की जैसी इच्छा । मैं खेलने सन्नद्ध हूँ" धर्मराज ने कहा ।

धृतराष्ट्र के आह्वान पर जुआ देखने कौरव वृद्ध भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर आदि सब पधारे ।

पहली बाज़ी पर धर्मराज ने अपना हार दाँव पर लगाया, तो दुर्योधन ने मणियों की राशि दाँव पर लगायी । धर्मराज हार गया ।
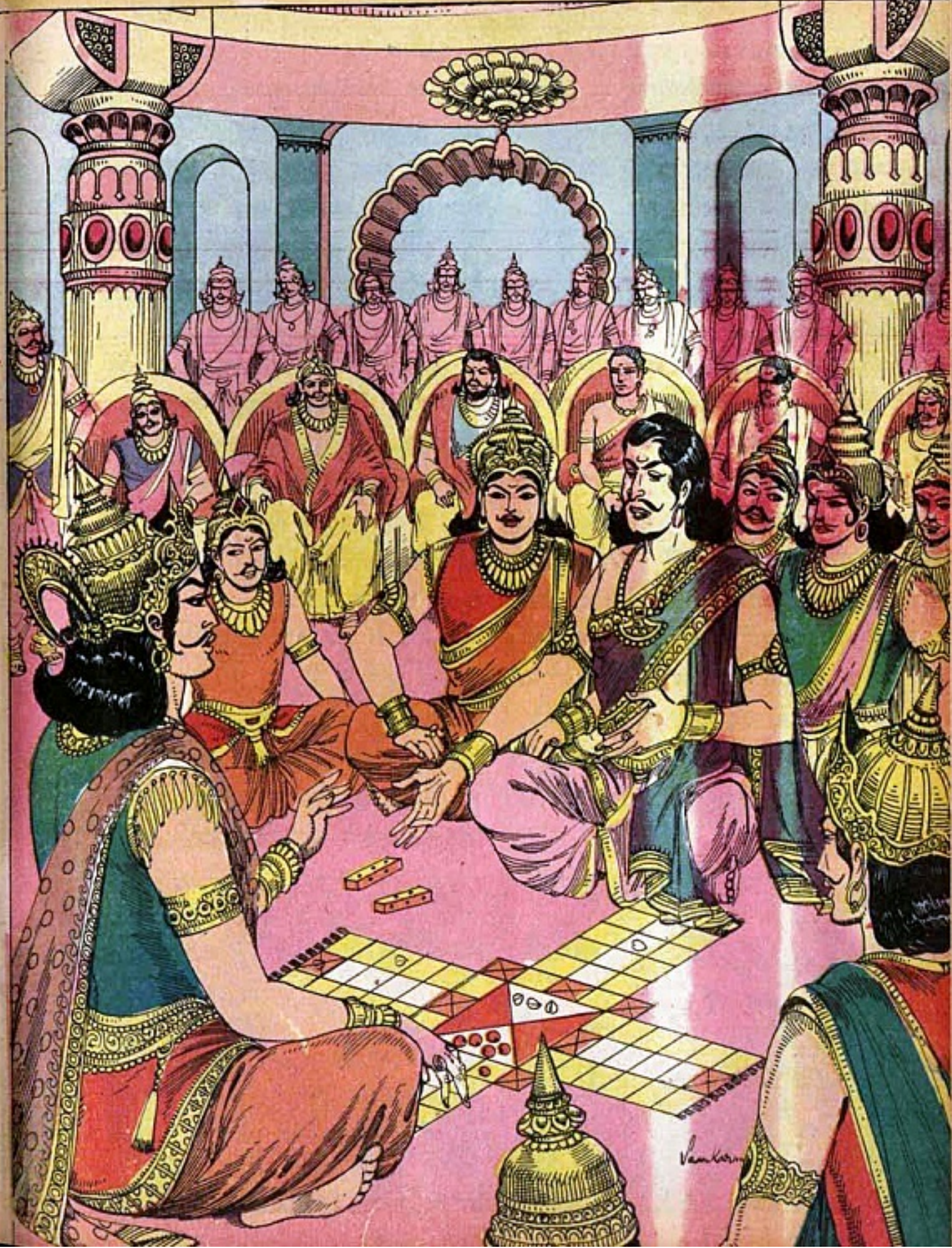
तदुपरांत धर्मराज सब बाज़ियाँ हारता रहा। जुए में हारते-हारते धर्मराज के क्रोध व प्रतीकार का पारा चढ़ता गया। सोना, हाथी, घोड़े, रथ, दासी तथा अनेकों और निधियों को धर्मराज ने खो दिया।

होते हुए इस अन्याय को विदुर से देखा नहीं गया। उसने धृतराष्ट्र से कहा "कहते हैं कि जिसकी मृत्यु निश्चित है, उसे कोई भी दिव्य औषध रुचिकर नहीं लगता। वैसे ही मेरी बातें भी आपको रुचिकर नहीं लगेंगीं। आपके पुत्र का जन्म कौरव कुल की प्रतिष्ठा मिटाने के लिए हुआ है। आप भी इस कपटी जुए का प्रबंध करके पांडवों के धन को लूट रहे हैं। इससे आपकी अपार हानि होगी। मेरी बात पर ध्यान दीजिये। पाँडवों को क्रोधित मत कीजिये। आज नहीं तो किसी न किसी दिन उनके क्रोध का शिकार होना पड़ेगा आपको। निश्चय ही आप लोगों का निर्मलून हो जायेगा। अच्छा इसी में है कि जुआ बंद किया जाए।"

धृतराष्ट्र मौन रहा, पर दुर्योधन ने आवेश में आकर विदुर को खूब गलियाँ दीं। इस बीच धर्मराज ने अपने पास जो था, सब कुछ खो दिया। ब्राह्मणों के खेतों तथा ब्राह्मणों को छोड़कर शेष जन भी खो दिये। शकुनि ने पासे धर्मराज के सामने फेंके और कहा "दाँव पर रखने तुम्हारे पास और बचा ही क्या है?"

धर्मराज ने नकुल और सहदेव को दाँव पर रखा। दोनों को खोया। बाद अर्जुन और भीम को भी खो दिया। अपने आपको भी दाँव पर रखा और हार गया।

"द्रौपदी तुम्हारी ही संपत्ति है। दाँव पर रखो" शकुनि ने ललकारा। उस बाज़ी में भी वह हार गया।

इस घटना से सभा में शोरगुल मच गया। कुछ ने टिप्पणी की कि कौरवों का अंत निकट ही है। भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य मौन ही रहे। अपनी नित्सहायता पर वे लज्ज़ित हुए। विदुर केवल फुफकारता रहा। दुर्योधन और दुश्शासन के आनंद की सीमा न रही।

'चन्दामामा' परिशिष्ट - ९१

हमारे देश के वृक्ष

बाकौस

कांतियुक्त हरे रंग से लगभग एक फुट लंबे व फैले पत्तों से भरे नीम का वृक्ष साधारण नीम की जाति का वृक्ष नहीं है। यह वृक्ष आकार में काफ़ी बड़ा है और इसके पत्ते भी नीम के पत्तों से काफ़ी बड़े होते हैं। ये बड़े पत्ते छोटे-छोटे पत्तों में चिर जाते हैं। अंडाकार में इसके किनारे खुरदरे होते हैं।

हिन्दी में इसे 'बाकौस' बंगाली में 'महानीम' तमिल में 'मलैवेंबु', मलयालम में 'करीनवेंबु', तेलुगु में 'महावेपा', मराठी में 'पेजी', गुजराती में 'बाकान लिम्डो' कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसे 'बीड ट्री' पर्शियन में इस 'लिलाक' कहते है। बताया जाता है कि यह वृक्ष पर्शिया व बलूचिस्थान से इतर प्रदेशों में विस्तरित हुआ है।

इसके फूलों का रंग बैंगनी होता है। कोमल नीले रंग के पत्तों से भरा यह बहुत ही सुंदर दिखाई देता है। इससे बहनेवाली मधुरता भरी हवा शरीर को पुलकित करती है। वसंत ऋतु के आरंभ में आने मार्च-अप्रैल महीनों के मध्य कोमली शाखाओं में फूल उग आते हैं। फिर धीरे-धीरे पत्ते फैलने लगते हैं। थोड़े ही दिनों में पत्तों और फूलों से पूरा पेड़ सुशोभित दीखने लगता है। दो-तीन महीनों के बाद फूल झड़ जाते हैं।

इसके फल गोल होते हैं। अंदर गूदा होता है। चार बीजों के साथ ऊपरी भाग इसका छपड़ा सख्त होता है। पक्षी इन फलों के को बड़े चाव से खाते हैं। पर कहा जाता है कि मनुष्यों के लिए यह विष के समान है। इसके बीजों में औषधियों के गुण हैं। खासकर जोड़ों के दर्द को मिटाने में यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। ये बीज हारों में भी पिरोये जाते हैं।

ये पेड़ लगभग १२-२५ मीटर की ऊँचाई तक बढ़ते हैं। पेड़ घने और छतरी की तरह होते हैं। छाया के लिए इसे पनपते हैं। ये बड़ी ही तेज़ी से बढ़ते जाते हैं।

हमारे देश के ऋषि :

महीदास-कवश

विशाल नामक ऋषि के यहाँ कितने ही शिष्य विद्याभ्यास करते थे। उनमें से उनका पुत्र भी था। जब शिष्यों को ज्ञात हुआ कि ऋषि विशाल, उस दिन यज्ञ की विधि का विवरण सुनानेवाले हैं तो उनका पुत्र भी बड़े ही उत्साह से वहाँ उपस्थित हुआ। परंतु विशाल ने, उसे दूसरा कार्य सौंपा और उसे वहाँ से भेज दिया।

अपने पिता की इस प्रवृत्ति से चकित पुत्र अपनी माता इतर से मिला और आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा "मालूम नहीं, क्यों पिताश्री यज्ञ की विधि को सीखने से मुझे दूर रखना चाहते हैं? वे क्यों यज्ञ की इस विधि का विवरण मुझे बताना नहीं चाहते?"

माँ ने कहा "पुत्र, तुम्हारे पिता ब्राह्मण हैं, परंतु मैं तो एक किसान के परिवार की हूँ। तुम्हारे पिता केवल ब्राह्मणों को ही यज्ञ की विधि सिखाते हैं। उनके न सिखाने से तुम्हें नष्ट पहुँचनेवाला नहीं है। अभी से भूमाता की तुम पूजा करो, जो मानव-जीवन का आधार-केंद्र है। सर्वसंपदाओं व विद्याओं का मूल भूमाता ही है। वह देवी अनुराग-पूर्ण है। इस पूजा से तुम्हें ज्ञान भी प्राप्त होगा।"

इसके उपरांत वह बारह वर्षों तक भक्ति व श्रद्धा से भूमाता की पूजा करता रहा। गंभीरता से प्रकृति का परिशीलन करता रहा। खेती करता रहा। वे ही जब बड़े बने, महीदास के नाम से श्रेष्ठ ऋषि कहलाये जाने लगे। माता के नाम के कारण उन्हें इतरेय भी कहने लगे। उन्होंने 'ऐतरेय ब्राह्मण', 'ऐतरेय अरण्यका', 'ऐतरेय उपनिषद' नामक तीन ग्रंथों की भी रचना की। वे एक सौ पंद्रह साल जीवित रहे। फिर भी उनकी माता ब्राह्मण नहीं है, सब उनका आदर करते रहे।

उनसे रचित 'ऐतरेय ब्राह्मण' नामक ग्रंथ में कवश नामक एक और ऋषि का ज़िक्र है। कवश की माँ भी ब्राह्मण नही थी। जब सरस्वती नदी के किनारे मुनि तपस्या में लीन थे, तब कवश वहाँ आये। मुनियों ने उनसे पूछा "हमने तो तुम्हें आह्वातित नहीं किया, फिर भी यहाँ क्यों आये?"

कवश जब वहाँ से निकलकर जानें लगे, तब सरस्वती नदी की धारा उनके समीप पहुँची और उनके पैरों का अभिषेक जल से किया। यह देखकर मुनि हतप्रभ हो गये। वे अब कवश की श्रेष्ठता के बारे में जान गये और उनसे क्षमा-याचना की।

क्या तुम जानते हो ?

१. एक ऐसे देश की प्रजा है, जो ज्वालामुखी को पवित्र मानती हैं। उस ज्वालामुखी का क्या नाम है?
२. विंबिल्डन टेनिस में भाग लेनेवाले प्रथम भारतीय का क्या नाम है?
३. हमारे देश में मानव द्वारा निर्मित सबसे बड़ा तालाब कौ... ... है?
४. आभूषण बनाने के लिए कौन-सा लोह मिश्रित होता है?
५. कोलंबस ने अमेरीका को कब खोज निकाला?
६. किसे 'बंगाल विषाद नदी' कहते हैं?
७. अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में कितने न्यायाधीश होते हैं?
८. हमारे देश के नागरिक राकेश शर्मा ने कब दो और रूसी व्योमगामियों के साथ यात्रा शुरु की?
९. फाहियान हमारे देश में कब आये?
१०. एशिया-क्रीडाएँ प्रप्रथम कब हुईं, कहाँ हुईं, चांपियन कौन थे?
११. मानव-शरीर में हड्डियों का उपयोग क्या है?
१२. ताजमहल का निर्माण किसने किया? उसके निर्माण-कार्य में कितना समय लगा?
१३. मंगोलिया की राजधानी का क्या नाम है?
१४. वल्लभभाय पटेल को 'सरदार' क्यों कहते हैं?
१५. संसार में बड़े पैमाने पर ''अनाज का व्यापार'' कहाँ होता है?
१६. हमारे देश का सबसे बड़ा प्रपात कौन-सा है ?

उत्तर

१. मौंट फ्यूजियामा, जापान में
२. सरदार निहिल सिंग, १९०८ में
३. नर्मदा
४. तांबा
५. १४९२ में
६. दामोदर
७. पंद्रह
८. १९८४, अप्रैल, ५
९. ई.स. ४०५-४११ के बीच
१०. १९५१, नई दिल्ली, भारत, जापान
११. शरीर को ढाँचा देते हैं। हृदय, मस्तिष्क, साँस खींचने की थैलियाँ जैसे अवयवों की रक्षा करते हैं।
१२. मुगल बादशाह शाहजहाँ, २२ साल
१३. उलान बेटार
१४. गुजरात के बारडोली में उन्होंने कर-निराकरण आँदोलन का नेतृत्व किया, इसलिए उन्हें सरदार कहने लगे।
१५. अमेरीका के चिकागो में
१६. कर्नाटक के जोग प्रपात

छप्पर फाड़कर

गौरीधाम का शंकर कभी बड़ा ही संपन्न व्यक्ति था। बहुत ही नादान भी था। इन दोनों कारणों से उसकी संपन्नता क्षीण होती गयी। जिसने जो चाहा, वह दे देता ता। खाली हाथ लौटने की नौबत ही न आती थी। इसलिए आज वह गरीब हो गया। गरीबी में वह अपनी जिन्दगी गुजारने लगा। उसकी पत्नी बहुत पहले ही मर चुकी थी। उसका अब एकमात्र सहारा था, उसकी बेटी शकुंतला।

शकुंतला देखने में बड़ी सुंदर लगती थी। दूसरों से उसका व्यवहार भी बहुत ही शिष्ट होता था। शंकर को यह सोच-सोचकर दुख होता था कि अपनी इकलौती बेटी को सुखी रख नहीं पा रहा हूँ।

शंकर के दुख को देखते हुए उसका निकट मित्र भूपति शकुंतला के लिए एक अच्छा रिश्ता ले आया। वर सत्यवान कृष्णपुरी की कचहरी में काम कर रहा है। एक सुंदर लड़की से शादी करने की उसकी इच्छा है। उसके दूर के रिश्तेदार भूपति ने उसे शकुंतला के बारे में बताया। सत्यवान ने शकुंतला को देखने की इच्छा प्रकट की।

भूपति ने, शंकर को सत्यवान के बारे में बताते हुए कहा "दुल्हे का बाप पैसों के पीछे पागल है। पर, सत्यवान को लड़की पसंद आ जाए तो हम उसे समझा-बुझा सकते हैं और कम दहेज देकर शादी करा सकते हैं। मेरी तो आशा है कि बात बन जायेगी।"

शंकर ने अपनी विवशता बताते हुए कहा "दहेज में कम से कम पाँच हजार तो देने ही होंगे। इस दशा में मेरे लिए यह संभव नहीं है। अलावा इसके, शादी कराने के लिए खर्चा भी होगा। इतनी रकम कहाँ

से लायेंगे।"

सकुचाता हुआ भूपति बोला "कोदंडराम ने क़रीबन पंद्रह साल पहले किसी और शहर में जाकर व्यापार करने के लिए आपसे धन लिया था और परिवार सहित शहर चला गया था। याद है?"

शंकर ने कहा "वह तो बहुत पहले की बात है। वे आजकल कहाँ है, यह भी तो नहीं जानते।"

"हफ्ते भर पहले मैं कृष्णपुरी गया था। वहाँ के विष्णु भगवान के मंदिर गया। उस समय वहाँ के रखवाले सबको भगा रहे थे। थोडी दूरी पर खडा मैं देख रहा था कि क्या हो रहा है। चार राजकर्मचारियों के साथ कोदंडराम वहाँ आया। पंद्रह साल पहले जैसा था, वैसा ही है। मैंने अपना संदेह दूर करने के लिए बगल के आदमी से पूछा कि ये कौन हैं? तब उसने कहा "कोदंडराम नामक शहर के बहुत बड़े व्यापारी हैं। बहुत ही बड़े धर्मात्मा हैं। मंदिर के पीछे की बड़ी सराय उन्हीं की बनवायी हुई है। मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसा बड़ा धर्मात्मा कभी भी इस तरफ़ आया ही क्यों नहीं? तुमसे मिलने क्यों नहीं आया? तुम्हारा कर्ज़ चुकाया ही क्यों नहीं? नाम तो कमा लिया, किन्तु ऐसा करना क्या उचित है? मालूम नहीं, क्यों उससे मिलने की मेरी इच्छा ही
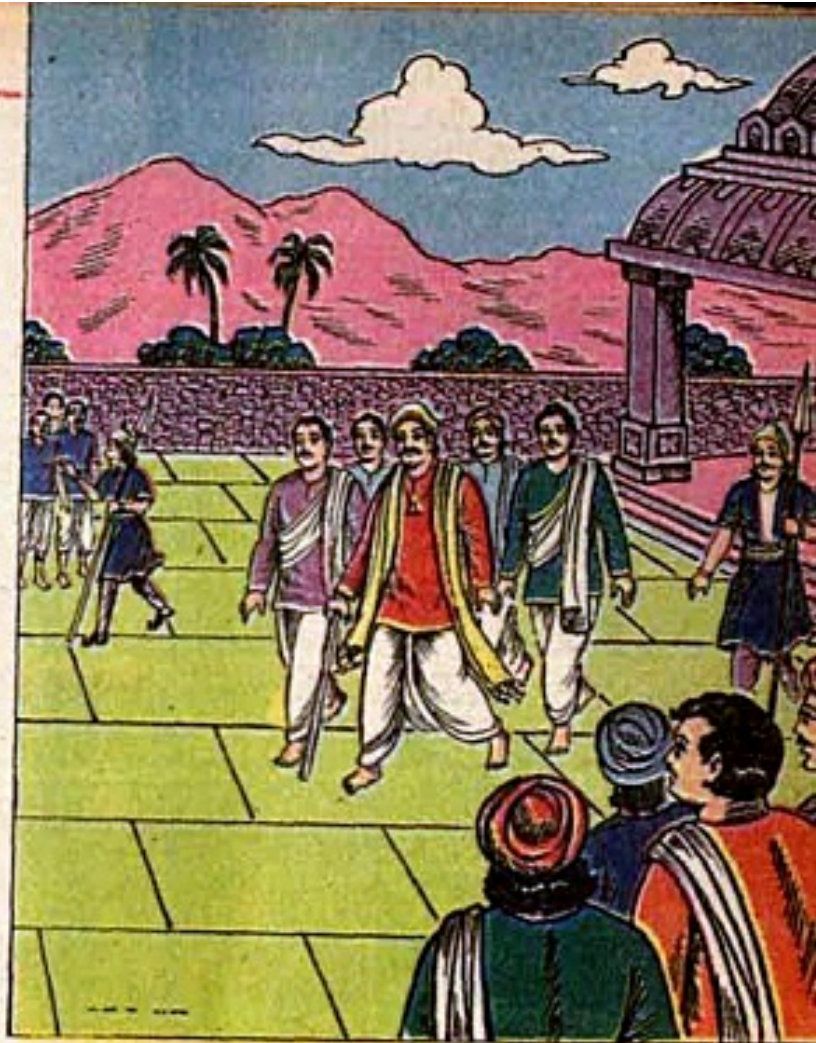
नहीं हुई।"

"ऐसी बात है? भगवान की दया से वह बड़ा बन गया। और क्या चाहिये।" शंकर ने तृप्ति-भरे स्वर में कहा।

भूपति ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा "अपनी शक्ति से अधिक दान देकर तुमने अपनी ऐसी हालत बना ली। इस स्थिति में भी अगर तुम हाथ पर हाथ धरे बैठ गये तो तेरी बेटी की ज़िन्दगी का क्या होगा? उसकी ज़िन्दगी को पार लगाना तो तुम्हारा फ़र्ज़ है। इन दुल्हेवालों के चले जाने के बाद हम दोनों कोदंडराम से मिलेंगे और उससे सहायता माँगेंगे।"

शंकर ने 'हाँ' के भाव में अपना सिर

हीं शंकर की वर्तमान स्थिति बता दी। किसी भी परिस्थिति में वह पाँच हज़ार से ज़्यादा दे नहीं पायेगा।''

रामावतार ने अपना क्रोध छिपाते हुए कहा ''पाँच हज़ार, सिर्फ पाँच हज़ार? कोई सुनेगा तो हँस पड़ेगा। पंद्रह हज़ार से एक रुपया भी कम हुआ तो मैं नहीं मानूँगा।''

इतने में घर के सामने घोड़ा - गाड़ी आकर रुकी। उसमें से एक युवक उतरा और दोनों हाथों में दो थैलियाँ लिये अंदर आया।

उसके अंदर आते ही रामावतार फौरन उठ खडा हो गया और उस युवक को नमस्कार करते हुए आश्चर्य-भरे स्वर में बोला ''बाबूजी, यहाँ कैसे आना हुआ?''

उसके इस प्रश्न पर वह युवक मुस्कुरा पड़ा और उसकी तरफ़ आश्चर्य से देखते हुए शंकर के पास आकर उसके पैरों को छूया। फिर उसने पूछा ''शंकरजी, आपने मुझे पहचाना नहीं? मैं आपके आप्त मित्र कोदंडराम का बड़ा पुत्र हूँ। पंद्रह साल पहले बालगोपाल कहते हुए मुझे प्यार करते थे, चूमते थे। मैं वही गोपाल हूँ।''

उसकी बातों को सुनते ही शंकर ने बहुत ही आनंदित होते हुए कहा ''कितने बड़े हो गये। तुम सब लोगों को देखे एक

हिलाया। थोड़े ही दिनों बाद दुल्हे का बाप रामावतार, बेटे सत्यवान तथा बहुत-से रिश्तेदारों के साथ शकुंतला को देखने, बड़े ठाठ-बाट के साथ आया। दुल्हिन शकुंतला सबको बहुत ही पसंद आयी।

रामावतार ने भूपति से कहा ''भूपति, लडकी हम सबको बहुत अच्छी लगी। तुम तो जानते ही हो कि मेरे बेटा कचहरी में काम कर रहा है। दहेज में पच्चीस हज़ार देकर रिश्ता क़ायम करने के लिए बहुत लोग आये। पर, लड़की के पसंद न आने से हमें उन रिश्तों में से कोई रिश्ता पसंद नहीं आया।''

भूपति ने कहा ''रामावतार, मैंने पहले

अर्सा बीत गया। माँ और पिताजी सकुशल हैं ना?''

''सब कुशल हैं'' कहता हुआ वह रामावतार के बग़ल में खड़ा हो गया और पूछा ''क्या मैं जान सकता हूँ, आप यहाँ क्यों आये?''

रामावतार ने शकुँतला की ओर इशारा करते हुए कहा ''इसकी शादी अपने सत्यवान से कराने के इरादे से आया। शंकरजी का कहना है कि वे मेरा माँगा दहेज नहीं दे सकते। अब मैं चलता हूँ।'' कहकर दो क़दम आगे बढ़ाये।

गोपाल ने रामावतार को रुकने को कहा और उससे कहा ''आपने पूछा कि मैं यहाँ क्यों आया। अब सुनिये। मेरे पिताजी चाहते हैं कि शकुँतला उनके घर की बहू बने, याने मेरी पत्नी बने। आपको देखकर लगा कि मैंने देरी कर दी। जो भी हो, मेरे पिताजी की इच्छा पूरी करने में आपने बड़ी सहायता की। इसके लिए आपको धन्यवाद।''

उसकी बातों में निहित व्यंग्य जानकर रामावतार नाराज़ हो उठा और अपने साथ आये लोगों के साथ जल्दी-जल्दी बाहर चला गया।

उनके चले जाने के बाद शंकर और शकुँतला को देखते हुए गोपाल ने कहा ''आप लोगों का अभिप्राय जाने बिना ही
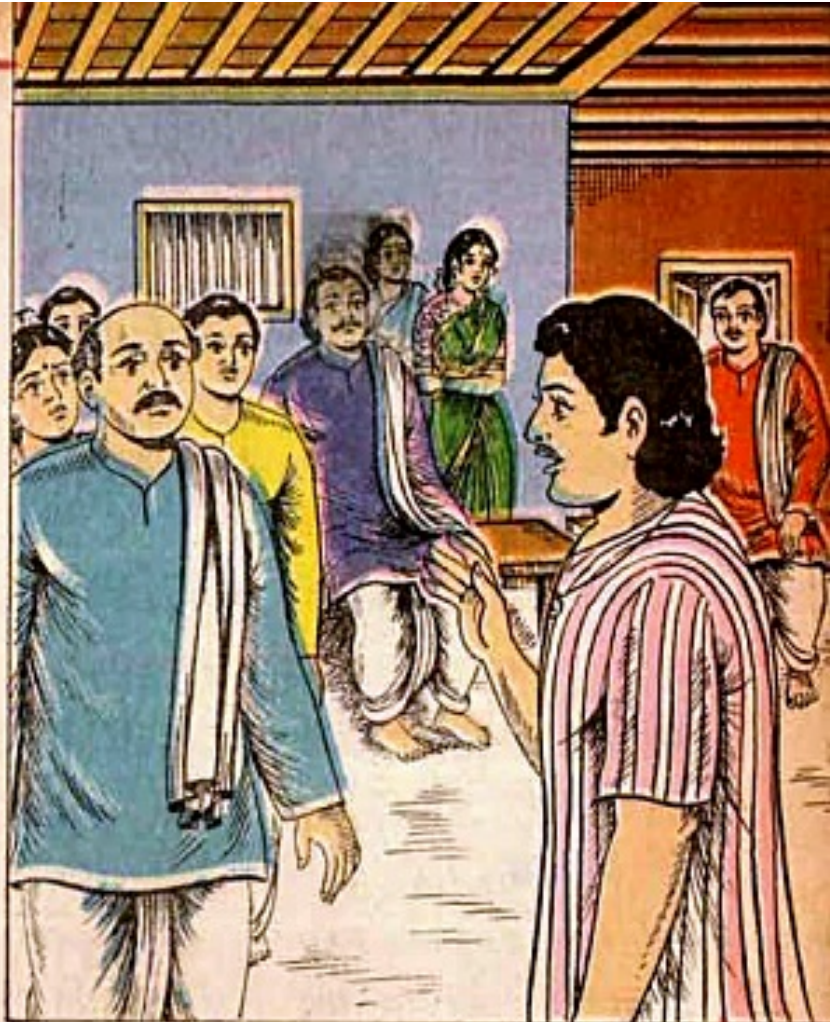
मैंने ज़ल्दबाजी कर दी। अब पूरा विवरण मुझसे सुनिये।'' फिर वह यों कहने लगा।

''पंद्रह साल पहले जब मेरे पिताजी ने आपसे धन लिया, तब आपकी आर्थिक स्थिति क्षीण होती जा रही थी। पिताजी ने कृष्णपुरी में आकर व्यापार शुरु कर दिया। उन्होंने जो भी किया, सफल हुए। साल पूरा होते ही आपका धन मय ब्याज के चुकाने आपके घर निकले। तब रास्ते में उनके एक मित्र से उनकी मुलाक़ात हुई और उससे मालूम हुआ कि आपके स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं आया। अपात्र दान अब भी ज़ारी है। इसलिए उन्होंने तब आपको धन लौटाने का उद्देश्य स्थगित कर

दिया। उस धन को आप ही के नाम पर व्यापार में लगाया। हर साल जितना लाभ होता था, वह आप ही के नाम पर अलग सुरक्षित रखते आये। वह धन अब मैं इन दो थैलियों में लाया हूँ। अब रही" कहकर गया।

शंकर ने कहा "क्यों हिचकिचा रहे हो? जो कहना है, नित्संकोच कहो।"

गोपाल ने शकुंतला की तरफ़ देखते हुए कहा "शंकरजी, मेरे माँ-बाप आपको बहुत मानते हैं। आपका बहुत आदर करते हैं। उनकी इच्छा आपकी बेटी को बहू बनाने की है। मैंने कहा कि लड़की के अच्छे लगने पर मैं शादी करूँगा। इसीलिए वे स्वयं नहीं आये और मुझे भेजा। आपकी बेटी मुझे बहुत अच्छी लगी। अब निर्णय आपके हाथ में हैं।"

उसकी बातों से प्रसन्न शंकर और भूपति ने शकुंतला को देखा। शकुंतला लज्जित हो सिर झुकाकर बोली "मेरे पिताजी के आप्त मित्र व हमारे साथ बड़ी ही आत्मीयता के साथ व्यवहार करनेवाले व्यक्तियों की इच्छा, मेरे लिए आज्ञा के समान है। भगवान को समर्पित पवित्र पुष्प को लेकर बालों में सजाने से जो आनंद मिलता है, उसी प्रकार का आनंद मैं महसूस कर रही हूँ। इस आज्ञा का मैं सहर्ष पालन करूँगी।"

शकुंतला की बातें सुनते ही शंकर अपार हर्षित हुआ और वह गोपाल से गले मिलते हुए बोला "बेटे, कहते हैं कि अच्छे मित्र से कोई रिश्तेदार अधिक नहीं। यह तुमने आज साबित कर दिया।"

भूपति ने खुशी जाहिर करते हुए कहा "तुम्हारे पिता सच्चे दोस्त हैं। अच्छी दोस्ती के वे नमूने हैं। असली भाग्यवान तो शंकर है। ऐश्वर्य, ऐश्वर्य से भी बढ़कर अमूल्यवान मैत्री, तुम जैसा गुणवान दामाद, सब एकसाथ उसे मिल गये। ठीक ही कहते हैं, भगवान जब देते हैं, छप्पर फाड़कर देते हैं।" कहते हुए उसने शंकर का हार्दिक अभिनंदन किया।

बुरा और अच्छा दरवाज़ा

समर और सरन नामक युवक एक ही गाँव के निवासी थे। बचपन से ही वे जिगरी दोस्त थे। थोड़े सालों के बाद सरन अपना पेट भरने के लिए काम की खोज में बहुत ही दूर के प्रदेश में चला गया। समर अपने ही गाँव में रहकर खेती करने लगा और खूब कमाने लगा। पशु-संपदा भी बढ़ा ली और शादी भी कर ली। नया घर भी बनवा लिया और आराम से रहने लगा।

गाँव छोड़कर गया सरन सात सालों के बाद वापस आया और अपने बचपन के दोस्त समर से मिलना चाहा। उसके छोटे घर की जगह पर अब वहाँ बड़ा घर है। उसके सामने बबूल का जो पेड़ है, अब बड़ा हो गया। उस पेड़ के चारों ओर एक चबूतरा भी बनाया गया।

सरन ने मन ही मन सोचा "समर का हाल अच्छा है।" जब वह घर के पास आया तो एक कुत्ता जोर से भोंकता हुआ सरन की तरफ़ दौड़ता हुआ आने लगा।

कुत्ते की भोंक सुनकर समर की पत्नी दरवाज़ा खोलकर बाहर आयी। उसने कुत्ते को डाँटकर भगाया और सरन की तरफ़ पैनी नज़र से देखने लगी।

सरन ने पूछा "क्या यही समर का घर है?" 'हाँ' के भाव में उसने सिर हिलाया।

"समर घर में है या कहीं बाहर गया?" सरन ने पूछा।

"मुझसे कुछ कहकर नहीं गये" समर की पत्नी ने रुखाई से कहा। सरन ने कहा "मैं और समर बचपन के जिगरी दोस्त हैं। सात सालों के पहले मैं यह गाँव छोड़कर चला गया। अपने बचपन के दोस्त को देखने आया हूँ।"

समर की पत्नी ने कुछ नहीं कहा। मौन रह गयी। सरन से अंदर आने को

नहीं कहा। सरन चबूतरे पर बैठ गया और दुपट्टे के आँचल से अपना पसीना पोंछने लगा। फिर पूछा "बुरा न मानना, सरन की तुम क्या लगती हो, उसकी पत्नी हो क्या?"

'हाँ' के भाव में उसने अपना सिर हिलाया।

"अच्छी बात है। लगता है, अभी-अभी शादी हुई। बाप रे, धूप कितनी तेज़ है। पीने के लिए थोड़ा-सा पानी दोगी?" सरन ने पूछा। अंदर गयी और लोटे में पानी ले आयी। पानी ठंडा नहीं था। पीने पर बदबू आयी। सरन ने पानी फेंक दिया और उसे लोटा लौटाते हुए कहा "अब मुझे निकलना चाहिये। बड़ी आशा लेकर आया कि समर से मिलूं, पर मिल नहीं पाया। उससे कह देना कि मैं उसे देखने आया। मेरा नाम सरन है। उससे यह भी बताना कि मैं उसकी औक़ात से बहुत खुश हुआ। घर भी खूबसूरत और बड़ा बनाया। पर उससे बताना ज़रूर कि यह दरवाज़ा मुझे अच्छा नहीं लगा। जो लगा, बता दिया, बुरा न मानना। यह दरवाज़ा तो बिलकुल सही नहीं है। मैं बढ़ई हूँ। दरवाज़ों के बारे में भली-भांति जानता हूँ। शायद समर ने इस दरवाज़े के बारे में ध्यान दिया नहीं होगा, पर अवश्य उससे बताना कि मुझे यह दरवाज़ा सही नहीं लगा।" कहकर सरन वहाँ से चला गया।

अंधेरा छा गया, फिर भी समर घर नहीं

लौटा। आधी रात को वापस आने के बाद जब उसे मालूम हुआ कि सरन आया और वापस भी चला गया तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अपनी पत्नी से कहा "उसे रोक सकती थीं। उसे क्यों जाने दिया? उसने क्या कुछ कहा?"

"कहा कि हमारी औक़ात को देखकर बहुत खुश हैं। कहा भी कि घर बहुत अच्छा है। पर उन्होंने कहा कि हमारे बाहर का दरवाज़ा सही नहीं है। अपने बढ़ई होने का दावा करते हुए उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मुखद्वार बिल्कुल सही नहीं है। उन्होंने ज़ोर दिया कि मैं ज़रूर आपसे यह बात बताऊँ।" समर की पत्नी ने बताया।

समर आश्चर्य में डूब गया और बड़ी ही सावधानी से मुखद्वार को देखता रहा। किन्तु उसमें, उसे कोई कमी दिखायी नहीं पड़ी।

एक साल गुज़र गया और फिर गर्मी के दिन आ गये। सरन एक और बार किसी काम पर उस प्रदेश में आया। सोचा, इस बार ही सही, अपने बचपन के दोस्त समर से मिल लूँ। वह उसके घर गया और समर का नाम लेकर उसे बुलाया।

समर की पत्नी दरवाज़ा खोलकर आयी और सरन को देखकर खुश होती हुई कहा "आइये, आइये, अंदर आइये।" सरन ने पूछा "समर घर पर हैं?" कहकर वह
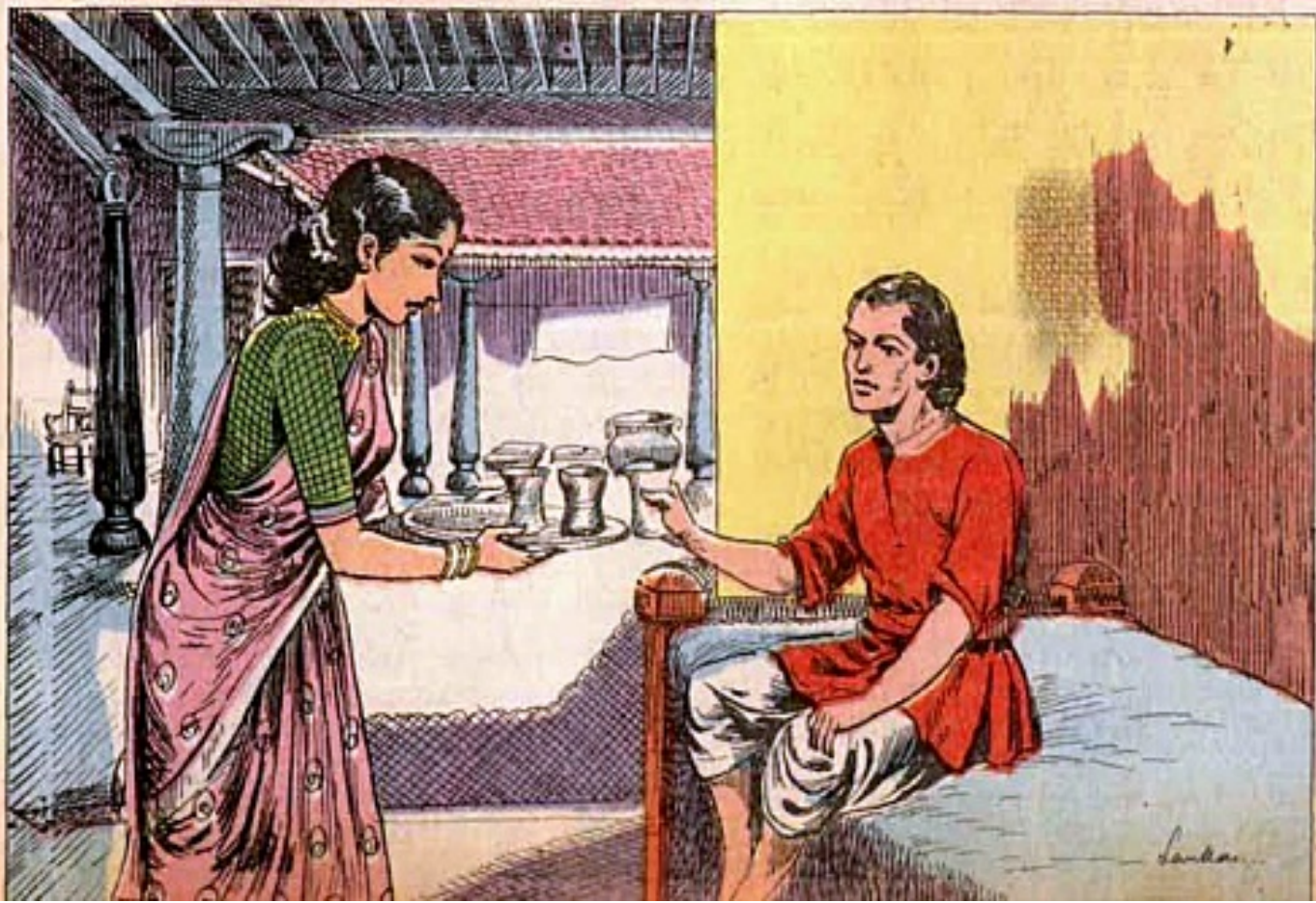
दरवाज़े के सामने खड़ा हो गया ।

"नहीं, वे बाहर गये हैं । जल्दी ही आ जाएँगे । आप अंदर आइये तो सही" उसने बड़े प्यार से कहा । धूप तेज़ थी, फिर भी सरन ने अपना सिर हिलाते हुए कहा "कोई बात नहीं । उस पेड़ की छाया में आराम से बैठ जाऊँगा ।" कहकर वह चबूतरे की तरफ़ बढ़ने लगा ।

"यह कैसे हो सकता है । आप पेड़ के नीचे ऐसे बैठनेवाले हैं, मानों हमारा अपना घर, कोई घर ही नहीं । अंदर आइये ना ।" ठीक है, तुम्हारी जैसी इच्छा" कहता हुआ वह समर के घर के अंदर गया ।

घर के अंदर ठंडक थी, साथ ही आराम देह भी । समर की पत्नी ने पलंग बिछाया ।

"सोचा कि इस बार ही सही, समर से मुलाक़ात होगी । पर लगता है, इस बार भी इस भाग्य से वंचित ही रह जाऊँगा ।" सरन ने लंबी साँस खींचकर कहा ।

समर की पत्नी अंदर गयी और थोड़ी ही देर में एक थाली में तीन लोटे रखकर ले आयी और उसके सामने रखा । उनमें गाढ़ा मट्ठा, नारियल का पानी, ठंडे गागर का ठंडा पानी था । उसने सरन से कहा "लीजिये । भोजन के समय तक वे लौटेंगे । तब तक आराम कीजियेगा ।" सरन ने सोचा "समर की पत्नी कितना बदल गयी ।"

थोड़ी देर में वह रसोई-घर से बाहर आयी और सरन से कहा "बहुत समय हो गया । आप खाना खा लीजिये ।"

"इतनी जल्दी भी क्या है । समर को आने दो ।" सरन ने कहा ।

"अपनी भूख का पता उन्हें खुद नहीं है । पता नहीं, वे कब लौटेंगे । उनके लिए आप क्यों भूखे बैठे रहें? खाने आ जाइयेगा" समर की पत्नी ने कहा । सरन को सचमुच ही ज़ोर की भूख लग रही थी । वह खाने बैठ गया । खाना बहुत ही स्वादिष्ट था । खाना खाने के बाद वह सो गया । सूर्यास्त हुआ, फिर भी समर नहीं आया ।

सरन ने समर की पत्नी से कहा "अब

मुझे जाना है। उससे मिलना ही संभव न हो पाया।''

''मत जाइये, इस बार भी आप उनसे बिना मिले ही चले जाएँ तो बहुत दुखी हो जाएँगे। आज रात को ठहर जाइये। कल सबेरे जा सकते हैं।'' समर की पत्नी ने आग्रहपूर्वक कहा।

''नहीं बहन, ज़रूर जाना है। और भी लोग मेरे साथ हैं, जो यात्रा में मेरे साथ-साथ आये। वे मेरा इंतज़ार करते होंगे। ऐसे तो रहना तो चाहता हूँ, पर यह संभव नहीं। समर से कहना, मैंने उसकी बहुत याद की। कहना कि यह घर और बगीचा देखकर मैं बहुत खुश हुआ। मैं बढ़ई हूँ। दरवाज़ों के बारे में खूब जानता हूँ। यह बहुत अच्छा दरवाज़ा है। श्रेष्ठ दरवाज़ा है।'' कहकर वह वहाँ से चला गया। समर बहुत देरी से घर लौटा। उसकी पत्नी ने सरन के आने की ख़बर दी और उसकी बातें भी दुहरायीं। सब सुनकर समर ने कहा ''सरन बड़ा ही योग्य व्यक्ति है। अच्छा दोस्त है और अक्लमंद भी।''

''पिछली बार जब आये थे तो कहते थे, हमारा दरवाज़ा बिल्कुल सही नहीं है, पर इस बार तो उन्होंने इसकी बड़ी तारीफ़ की'' अपना संदेह व्यक्त किया समर की पत्नी ने।

''पिछली बार जब उसने कहा कि हमारा दरवाज़ा सही नहीं, तब मैंने कुछ समझा नहीं था। पर जब इस बार उसने दरवाज़े की तारीफ़ की तो मैं समझ गया कि वह क्या कहना चाहता है। जानती हो, उसने ऐसा क्यों कहा? पिछली बार जब वह आया था तब तुमने समुचित रूप से उसे आतिथ्य दिया नहीं होगा। इसीलिए हमारे घर का मुखद्वार उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। इस बार उसका आतिथ्य अच्छी तरह से तुमने किया होगा, इसीलिए उसे इस घर का मुखद्वार बहुत ही सही लगा।'' समर ने यों कहकर उसके संदेह को दूर किया।

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ, अगस्त, १९९६ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

S.G. SESHAGIRI
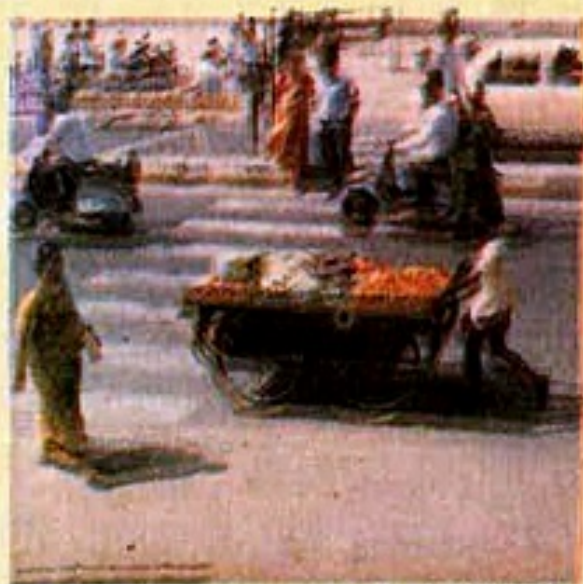
S.G. SESHAGIRI

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों। ★ १० जून, '९६ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए। ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००/- का पुरस्कार दिया जायेगा। ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें।

चन्दामामा, चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

अप्रैल, १९९६, की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : **पायल बाजे छन, छन, छन**

दूसरा फोटो : **घंटा बोले टन, टन, टन**

प्रेषक : **सोनू वसनदानी**

२७, तुलसीदास मार्ग, न्यू म्युनिसपल बिल्डिंग, चौक, लखनऊ - (पो.) उत्तर प्रदेश

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

जीवन में हो उमंग, मधुरता के संग.

तुलसी रोपूँ अपने अंगना
इसकी वृद्धि कभी रुके ना

अंधे चाचा कंवर बेचारे,
माता-पिता सा मुझे दुलारें
मैं भी उनके साथ जाउंगी,
उनको सड़क पार कराउंगी.

अरे हैं! डैडी को हो गया है फ्लू,
और मम्मी ने कहा है कि मैं उन्हें
दवा पिला दूं.

छुट्टी ले मंगूबाई की मौज
बर्तनों की जुटी है फौज
कहाँ से आई इतनी आफत
मेरी, राधा मौसी की मुसीबत

जब तक पेटू राजू आए
काजू बरफी मेरी चट कर जाए
उससे पहले स्मिता खाले
चाहे मुझे बिल्कुल न मिले.

टॉमी जब भी करता मस्ती
उसको चोट बहुत है लगती
डॉक्टर की दी दवा लगाऊँ
उसके जख्मो को सहलाऊँ

राजीव अंकल सुधारें कार
मेरी मदद उन्हें दरकार
मैंने उनका हाथ बंटाया
मम्मी सोचें काम बढ़ाया

चंद्रा टीचर पढ़ातीं हिसाब
मैंने उनको दिए गुलाब
कितने, इसका नहीं हिसाब

मीठी-मीठी कामयाबी का रस... बरसों-बरस.

टीचर की मनपसंद

अप्सरा ब्यूटी पेंसिलें.